अध्याय 3

नारी चेतना के संदर्भ में ब्रज लोकगीत

- नारी चेतना से तात्पर्य
- ब्रज लोकगीतों में नारी वेदना

  (संस्कार गीत, ऋतु गीत, विवाह गीत, श्रम गीत आदि में पीड़ा युक्त गीतों का वर्णन)
- ब्रज लोकगीतों में नारी चेतना का स्वर
- ब्रज लोकगीतों में नारी अस्मिता का बोध
- निष्कर्ष

अध्याय 3

नारी चेतना के संदर्भ में ब्रज लोकगीत

➢ नारी चेतना से तात्पर्य :-

सृष्टि निर्माण के आधीन ईश्वर ने सर्वश्रेष्ठ निर्माण मानव का किया। तत्पश्चात मानव जीवन को दिशा देने हेतु समाज का निर्माण हुआ होगा। सभ्य समाज के निर्माता मानव हैं, समाज की रुपरेखा एवं संचालन के लिए परमपिता ने मानव को दो समुदायों में बांटा १. पुरूष और २. स्त्री। समाज को सुगढ़ और समृद्ध बनाने हेतु कुछ आयाम निर्धारित किए गए जिसमें नियम और मर्यादाओं के साथ ही श्रम का विभाजन हुआ। महिलाओं को पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ मिला और पुरूष के हिस्से परिवार के पालन-पोषण का दायित्त्व मिला। समाज में नारी के लिए पुरूष समुदाय ने भिन्न-भिन्न मापदंड स्थापित किए हैं। आदर्श नारी की परिभाषा पुरुषों के संकुचित दृष्टिकोण से निर्मित है। स्त्री जन्म से लेकर मृत्यु तक किस रूप और ढंग से जीवन व्यतीत करेगी इसका फैसला पुरुष समाज आद्योपान्त तक ले चुका है। पुरुषों ने नारी को दायित्व और संस्कार के नाम से छला, उसका अस्तित्व घर की चारदिवारी के भीतर सिमट कर रह गया है। ऐसे मापदंडों का गठन पुरुषप्रधान समाज ने किया जिसमें सामजिक समानता न के बराबर है। धार्मिक एवं परंपरागत संस्कृति महिलाओं को दासता स्वीकार करने पर मजबुर करती है। हलांकि धार्मिक ग्रंथों में दर्शाए गए महिला पात्र सशक्त एवं सम्मान के प्रतीक हैं। अवसरवादी पुरुषों के द्वारा विपरीत परिष्यंद का स्त्रोत न जाने कहाँ से उत्पन्न

हुआ जिसके कारण नारी के लिए समाज में अनेकों विचारधाराएं एवं नियमों की आड़ में प्रतिबंध स्थापित किए गए।

पुरुष प्रधान समाज में जीवन का आदर्श, उनके जीवन का लक्ष्य मात्र सेवा है। महिलाओं के जीवन की उपलब्धि गृहस्थ जीवन को सुख व समृद्ध बनाना है यही सबसे बड़ा धर्म है। ईश्वर ने पुरूष और स्त्री में शारीरिक भिन्नता के अलावा कुछ भी अलग नहीं बनाया है, दोनों ही अपनी-अपनी कुशलता और बुद्धि के अनुरूप कार्य करने की क्षमता रखते हैं। सत्ताधारी पुरूष ने स्त्री के लिए अलग मापदण्ड बनाए। स्त्री बाल्यावस्था में पिता पर, यौवनावस्था में पति पर और वृद्धावस्था में पुत्र पर पराश्रित रहे ऐसी परंपरा सदियों से नारी को पुरूष का गुलाम बनाए हुए है। इस अन्याय को नारी ने आर्थिक रूप से निर्बल होने के कारण ही स्वीकार किया है।

भारतीय समाज में पौराणिक युग से पुरूष ने नारी के देवी रूप की आराधना की है। धन की देवी लक्ष्मी, विद्या की देवी सरस्वती, महाकाली, दुर्गा आदि देवियों का धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है, पुराणों में नारी के पत्नी रूप को अर्धांगिनी कह कर सम्मानित किया गया है जिसका अर्थ है पति का आधा भाग, पुरूष बिना स्त्री अधूरी है और स्त्री बिना पुरूष। सुखद गृहस्थ जीवन के लिए पति-पत्नी की आधिकारिक समानता को 'दांपत्य' कहकर संबोधित किया गया। तो कहीं न कहीं ऋषि मुनियों ने नारी को घृणा की दृष्टि से देखा। नारी को माया, मार्ग से भटकानेवाली, अग्नि आदि संज्ञा देकर नारी के अस्तित्व को अपमानित किया। स्त्री केवल साजसज्जा की वस्तु या मन बहलाने का साधन तो नहीं फिर भी हमारे समाज में नारी को तुच्छ समझा गया उसके अस्तित्व और गरिमा को पुरूषों ने पैरों तले रौंदा है। शायद इसलिए हमारी मनस्मृति आजतक परिवर्तित न हो सकी है। सदियों से चली आ रही पितृसत्तात्मक विचारधारा ने महिलाओं के अधिकारों का हनन किया है। जिस भारत देश में आदर्श पत्नी के लिए सीता माता का नाम लिया जाता है। प्रत्येक पत्नी माता सीता का आचरण धारण कर पतिपरमेश्वर की सेवा करे। सामाजिक नियमों के अनुसार 'दांपत्य' जीवन का आरंभ अनिवार्य है, किन्तु पुरूष जब किसी नारी के जीवन से जुड़ता है तो उसका एक मात्र उद्देश्य पत्नी को दासी बनाना है। वह

अपने जीवन की आपूर्ति के लिए विवाह करता है। मध्यकालीन ग्रंथों पर एवं तत्कालीन परिस्थितियों पर दृष्टि करने पर ज्ञात होता है कि नारी के स्वाभिमान, अधिकारों का हनन तो ऋषिमुनियों द्वारा स्थापित की गयी संकीर्ण और संक्रमित विचारधारा के कारण हुआ है। आदर्श नारी की परिभाषा पुरुषों द्वारा रची गई है। शास्त्रों में "**पतिसेवा गुरोवासो गृहार्थीअग्निपरिष्क्रिया"** कहा गया है। पत्नी के लिए पति की सेवा ही जीवन का एक मात्र पवित्र उद्देश्य है। सुखद दांपत्य जीवन के लिए महिलाएं यदि आत्मसमर्पण की भावना रखेंगी तो सुखी व संतुष्ट रह सकेंगी। आदर्श नारी वही है जो पति और कुटुंब की सेवा करे और ऐसी विचारधारा ही समाज को उचित बना सकती है। सुखद कौटंबिक जीवन के लिए पतिव्रता पत्नी और पत्नीव्रता पति दोनों ही आदर्श हैं। पुरुषों की इसी संकीर्ण विचारधारा के कारण ही आज समाज में नारी की स्थिति जस की तस बनी हुई है।

समाज में महिलाओं को आधिकारिक समानता और आर्थिक स्वतंत्रता के अध्ययन एवं विचार किया इस क्रांति को नारी-विमर्श कहकर पुकारा गया। नारी विमर्श का सुत्रपात पाश्चात्य देशों से हुआ जिसके बाद नारी के अधिकारों के इस आंदोलन को समग्र विश्व में फेमिनिस्म (Feminism) नाम से जाना गया। यह शब्द पाश्चात्य देशों में सन् 1895 में 'अन्तेन्वम्' पत्रिका से हुआ जिसका अर्थ महिलाओं के स्वायत्तता को स्थापित करना और अधिकारों के प्रति अग्रसर रहना यही इस फेमिनिस्म का उद्देश्य था। आंदोलनकारियों को फेमिनिस्ट (feminist) कहा गया। फ्रांसीसी साहित्यकार 'सिमोन द बोउआ' (1908-1986) ने स्त्री अध्ययन पर 'द सेकण्ड सेक्स' नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक ने समग्र विश्व में नारी विमर्श की लहर चल पड़ी। "स्त्रीवादियों के अनुसार स्त्री-पुरूष समानता स्थापित करने के साथ-साथ मनुष्य के रूप में या सामाजिक प्राणी के रूप में स्त्री की अलग विशेषताएँ दर्ज करना जरूरी है। लिंग आधारित होने के कारण उसकी अलग सौंदर्यमूलक पहचान हो सकती है। अत: विरोध या विद्वेष से बढ़कर स्त्री- अध्ययन या स्त्रीवादी अध्ययन सामाजिक सुधार के उपलक्ष्य में प्रवृत्त विचार है।"[1] नारी के संदर्भ में युक्त कदम उठाना नारी के हक लिए लड़ना ही नारी आंदोलन है, ग्रेट ब्रिटेन एवं

अमेरिका में नारी आंदोलन का सूत्रपात हुआ जिसके बाद महिलाएं हाथ में पोस्टर, बैनर लेकर सड़कों पर उतर आई। कामकाजी क्षेत्र एवं समाज में आर्थिक रूप से स्थायी होने की मांग की। अमेरिका की बैटि फ्रीडन की 'द फेमिनाइन मिस्टिक' (1963), केट मिलेट की 'सेक्सुअल पॉलिटिक्स'(1969), जेरमान गीर की 'द फीमेल युनक' (1970) आदि पुस्तकों के प्रकाशन से स्त्रीवादी दृष्टिकोण का विस्तार और व्यापक हुआ। आलोचनात्मक एवं वैचारिकी दृष्टिकोण से नारीवादी समर्थकों ने "अब हम स्त्री या पुरूष में नहीं, जन या लोक में रुचि रखते हैं"।[2] "बीसवीं सदी आठवें व नवें दशकों में आमेलिया जोन्स ने उत्तर-नारीवाद पर विशेष विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने यौनभेद को नारीवाद के अंतर्गत शामिल करने का विरोध किया, स्त्री व पुरूष कों 'इंसान' मानने का प्रस्ताव रखा। दो हजार छह में लिखी किताब 'बेकलाश : द अन डिक्लेयर्ड वार अगेन्स्ट अमेरिकन विमन' में सूसन फलूदी ने नारीवाद के नाम पर प्रसारित मीडिया रपटों व गलत धाराणात्मक निर्मितियों पर विस्तृत नज़र डाली है।"[3] विश्वस्तरीय नारी विमर्श की चिंगारी भारत में भी समान रूप से दिखाई पड़ती है।

भारतीय हिन्दी साहित्य के अंतर्गत नारी-विमर्श एक चर्चित और ज्वलंत विषय रहा है। भारत में महिला एवं पुरूष वर्ग की समस्याएँ एवं उनके प्रभाव पाश्चात्य देश की तुलना में भिन्न हैं। यहाँ दांपत्य जीवन, कौटुंबिक जिम्मेदारियाँ सामाजिक वंशानुगत परम्पराएं नारी को दासता और आजीवन परावलंबी रहने के लिए विवश करता हैं। प्राचीन युग में अधिकांशत: भारतीय नारी को शिक्षण के अधिकार से वंचित रखा गया था जिससे वह पित्तृसत्तात्मक समाज में अपने अधिकारों के प्रति जागृक न हो सके और दासता को स्वीकार कर अपना जीवन व्यतीत करे। किन्तु आधुनिक युग में युगपत परिवर्तन आए हैं और महिलाएं शिक्षा की ओर प्रेरित हुई हैं।

भारतीय समाज में सदियों से आदर्श भारतीय नारी की छवि आत्मसमर्पण और पारिवार कों प्राथमिकता देनेवाली, पतिपरमेश्वर की सेवाधर्म करनेवाली आदि संज्ञा से संबोधित किया गया है। माता सीता, द्रौपदी, रानी लक्ष्मीबाई, नूरजहां, रज़िया सुल्तान, मीराबाई, आदि महिलाओं का उल्लेख हम

इतिहास में ज्ञात कर आए हैं के इन नारियों ने अपने आत्मविश्वास के दम पर पुरुषों को लोहे के चने चबाएं हैं। चाहे वैदिक काल हो या ऐतिहासिक काल उपर्युक्त नारियों ने अपने अधिकारों के प्रति सजग रह कर अन्याय के प्रति आवाज उठाई।

नारी सशक्तिकरण का प्रभाव भारत में सक्रिय रूप से रहा है । नारीवाद ऐतिहासिक, मध्यकालीन, आधुनिक समय में अलग-अलग संश्लिष्ट समस्याओं को लेकर आगे बढ़ता रहा है। भारत में सतीप्रथा, बालविवाह, शिक्षण, कामकाजी क्षेत्र में नारी के प्रति घृणता आदि कुप्रथाओं और विचारधाराओं के लिए महिलाओं के साथ कुछ पुरुषों ने आंदोलन किए। कई सदियों तक समाज में कुप्रथाओं के खिलाफ़ आंदोलन हुए आंदोलनकारीयों के संघर्ष के बाद इन कुप्रथाओं पर अंकुश लगा और नारी को शिक्षा, विवाह आदि भारतीय परंपरागत परिपर्णता के अधीन नारी को प्रतिष्ठा के साथ कामकाज के अवसर मिले।

भारतीय महिलाओं में शिक्षण के प्रति जागृति आई भारत में शिक्षण के क्षेत्र में आदर से सावित्रीबाई फुले, फातिमा शेख, विमला कौल आदि का नाम लिया जाता है। भारत सरकार ने नारी को शिक्षण के प्रति जागृक एवं प्रोत्साहित करने हेतु कुछ नीतियों, आयोग, समितियों, योजनाओं का गठन किया है जिनमें राधाकृष्णन आयोग(1948), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952), दुर्गाबाई देशमुख समिति(1958), राष्ट्रीय महिला शिक्षा समिति (1958), हंसा मेहता समिति (1962), भक्त वत्सलम् कमेटी (1963), कोठारी कमीशन (1964-1966), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) आदि उल्लेखनीय है इसके अतिरिक्त महिला सशक्तिकरण हेतु भारत सरकार ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, वन स्टॉप सेंटर योजना, वुमन हेल्पलाइन 1098, उज्जवला, निर्भया, नारी शक्ति पुरस्कार आदि को गठन कर महिलाओं की सहायता की है।

भारत में स्त्री चेतना का उदय लगभग उन्नीसवीं शताब्दी से आरंभ होता है आजतक भारतीय असंख्य महिलाओं ने पितृसत्तात्मक विचारधारा को खंडित कर अपनी विशिष्ट छाप विश्वपटल पर छोड़ी

है। भारत में साहित्य,कला, संगीत, सिनेमा, खेल, राजनीति, आदि स्थानों से जुड़कर भारत की गरिमा में चार चाँद लगाए हैं जिनमें मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, अमृता प्रीतम, इस्मत चुगताई, साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा, कल्पना चावला, पी.टी. उषा, मदर टेरेसा, मैरी कॉम, इन्दिरा गांधी, प्रतिभा पाटील, द्रौपदी मुर्मू, लता मंगेशकर, दीपिका पादुकोण, प्रियंका चोपड़ा आदि सशक्त महिलाओं का योगदान है।

शिक्षित महिलाएं से ही समाज उन्नति के पथ पर अग्रसर रह सकेगा। इस बात पर पंडित जवाहर लाल नेहरु ने कहा था कि- "आप किसी राष्ट्र में महिलाओं की स्थिति देखकर उस राष्ट्र के हालात बता सकते हैं।" भारत में नारी विमर्श के उदय पर विद्वानों में एक मत स्थापित नहीं हो सका है। कुछ बुद्धिमनिषियों ने इसे पाश्चत्य से प्रेरित न मानकर पुराण-उपनिषद में वर्णित नारी के देवी रूप से नारी विमर्श का उद्भव माना है। माता सीता का भूमि में समाना नारी सशक्तिकरण की उत्तम मिशाल है। द्रौपदी का पांडवों को ललकारना महिला सशक्तिकरण का सर्वोत्तम उदाहरण है।

शिष्ट साहित्य से पृथक लोकमानव निर्मित ज्ञानकोश लोकसाहित्य में महिलाओं ने पितृसत्तात्मक विचारधारा के प्रति गीतों के माध्यम से आक्रोश व्यक्त किया है। नारी चेतना को प्रकट करते असंख्य लोकगीत विभिन्न भाषाओं में प्राप्त होते हैं।

➢ ब्रज लोकगीतों में नारी वेदना :-

- संस्कार गीत,
- ऋतु गीत,
- विवाह गीत,
- श्रम गीत आदि में पीड़ा युक्त गीतों का वर्णन

ब्रज लोकगीतों में जीवन के समग्र उच्छवन में घुलेमिले हैं। लोकमानव अपनी स्वानुभूतियों को लोकगीतों में प्रकट करता है, जीवन में सुख ही क्षणिक है अन्यथा दुख ही जीवन का साथी है। ब्रज लोकसाहित्य महासागर की भांति हैं जिसमें गोता लगाने पर विभिन्न रत्न प्राप्त होते हैं। ब्रज लोकगीत ब्रज के ग्रामीण आंचल से लोकानुभव से गीतों का निर्माण हुआ है। इन गीतों में सुख-दु:ख, हास-परिहास, हर्ष-विषाद, रुदन, इच्छा, उत्थान-पतन, आशा-निराशा, राग-विराग आदि की अभिव्यक्ति के ताने-बाने गूँथे हुए स्वरमय गीतों का भंडार ब्रज में है। लोकगीत भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। लोकगीत मौखिक परंपरा का अनुसरण करते हुए सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते चले आए हैं। इन सभी गीतों को स्त्रियों ने अपने कंठ में विद्यमान रखा है। डॉ. मैनेजर पाण्डेय के अनुसार "लोकगीतों का अस्सी प्रतिशत संबंध स्त्रियों के साथ होता है। मनुष्य संकटों के बीच जीने के रास्ते खोजता है; इस रास्ते में कला और साहित्य संजीवनी की तरह है। घर में चाहे कितना भी तनावपूर्ण वातावरण क्यों न हो लेकिन परिवार की स्त्रियाँ त्यौंहार आने पर उसके बहाने सुख के क्षण ढूंढ़ ही लेती है। तरह-तरह के गीत गाकर अपने मन को संतोष देती है। इस तरह गीत यातना भरी ज़िंदगी के बीच सुख के क्षण है।"[4] जन-जीवन के उतार चढ़ाव को इन लोकगीतों के माध्यम से महिलाएं संवेदनाओं को शब्दों में गूँथ के गाती हैं और इस तरह प्रतिदिन नये लोकगीतों का जन्म होता चला आया है। इस प्रथा के संचार को बरकरार रखने का श्रेय हमारे वृद्धों को है। जिसमें घर के बड़े-बुजुर्गों ने भी अहम भूमिका निभाई है दादा-दादी, नाना-नानी द्वारा गाये जाने वाले गीतों से बच्चों को ज्ञान मिलता है।

मानव जीवन संस्कार के वृत में अपना जीवनयापन करता है, मानव के लिए तीन संस्कार मुख्य है जन्म, मृत्यु, शादी-ब्याह। जन्म संस्कार से पहले ही गर्भाधान के सातवे माह से पुंसवन के गीत गाये जाते हैं। जन्म के बाद छठी के गीत, मुंडन के गीत, यज्ञोपवीत गीत, आदि गीत गाए जाते हैं। गर्भाधान से प्रसव तक की यात्रा को महिलाएं सोहर, सोबर या जच्चागीत है गाकर वर्णित करती हैं। समयानुसार इन लोकगीतों के परिवेश में परिवर्तन भी आए हैं। ब्रज लोकगीतों के जच्चागीत में वर्णित सास-ननंद के व्यंग्य इस प्रकार हैं-

"जच्चा तौ मेरी भोली रे भाली रे....

चार कनस्तर घी कै खाय गई

नौ मन पक्का जीरा रे

जच्चा मेरी खाना नौ जानै रे

सासुल लायी सोंठ ननदी लायी जीरा रे

ससुर लाये गरी के गोले रे

जच्चा मेरी खाना नौ जानै रे

पाँच मटुकियाँ पानी पी गई, दूध के कमन्डल सात

जच्चा मेरी पियौ नौ जानै रे

जच्चा तौ मेरी भोली रे भाली रे

साँप कूं मार बगल में दावै

बिच्छू मार सिरहाने धारा

जच्चा तौ मेरी मच्छरों से ऊ डरै रे

जच्चा मेरी..।" .

लोकगायक (मेहरुन्निसा एवं जैतुन अब्बासी)

प्रसव पीड़ा को चंद शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है, इस समय नारी मृत्यु और जीवन के द्वार पर खड़ी होती है, बालक को जन्म देकर वंश का सुत्रपात करती है तथा जीवन के नए अध्याय का उदघाटन करती है । यह वह समय है जब परिवार के प्रत्येक सदस्य को महिला की देखभाल करना चाहिए, इस समय में महिलाएं संवेदना के साथ सहानुभूति एवं अपनत्व की भूखी होती है। वंश को आगे बढ़ानेवाली महिलाओं का भी उचित ख्याल नहीं रखा जाता है तो वे अपनी प्रसव पीड़ा में पति से शिकायत करती है-

“जच्चा टुक-टुक करै ईशारे

राजा आय जाओ पास हमारे

हमनै कई थी पीया मैया लैके आइयौ

क्या बैरै कान तुम्हारे

राजा आय जाओ पास हमारे”।

-लोकगायक (मेहरुन्निसा एवं जैतुन अब्बासी)

नारी अपने पति से कहती है कि वह इस असहाय दर्द को सहने की परिकाष्ठा को लाँग चुकी है, ससुराल में उसे कोई भी सहायता प्रदान नहीं करता है इसलिए वह कहती है कि उसकी माँ को बुला लाओ यहाँ पति अपनी पत्नी की सुनता नहीं तो वह उसको बहरा, गूंगा,अंधा आदि शब्दों का प्रयोग कर अपने क्रोध को व्यकत करती है। पुत्र प्राप्ति के लिए भी हमारे समाज में पुंसवन के संस्कार और कई टोटके किए जाते हैं किन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से यह केवल पुरुष पर निर्भर करता है कि वह बेटा या बेटी उत्पन्न कर सकता है या नहीं । किन्तु अंधविश्वास के कारण आज भी कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां जप-तप कर पुत्र संतान प्राप्ति की लालसा में कन्या भ्रुणहत्या को अंजाम दिया जाता है।

ब्रज में पुत्र जन्म के अवसर पर ननंद को नेग दिये जाते हैं, बालक के काजल लगाने का नेक दिया जाता है जाता है।

“मांगे मांगे ननद रानी कंगना लाला के जनै,

भैया मेरो जीवै, भतीजा मेरो जीवै

जुग-जुग जीवै तेरौ ललना,

भाभी बार-बार आऊँ तोहरे अंगना लाला के भए,

कंगना उतार हाथ भरलीना।

लाला के जनै।”

-लोकगायक (जफर)

किन्तु बहन यदि समृद्ध घराने में ब्याही है और भाई और भाभी की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं होती है कि वह नेग दे सके तो ऐसी परिस्थितियों का उल्लेख लोकगीतों में किया गया है। इसके अतिरिक्त ब्रज में जन्म संस्कार के बाद स्त्री के मायके से छोछक आता है जिसमें समग्र परिवार के लिए उपहार, भेंट आदि दिए जाते हैं इस उपलक्ष्य में निम्नलिखित गीत है-

डाई उडि काग सुलाकने उडि मेरे पीहर जाऊं।

मेरी कहियो आय समुझाय, धीअर मांगे लाकुए।

मेरे कहिए बाबुल समझाय,बेटी तो मांगे खीचरी

मेरे कहियो बीरन समुझाय, मैना तो मांगे पियरौ

मेरी कहियो भावज समुझाय, ननदुलि तो मांगे खीचरी

बेटी नित उठ जनमोगी पूत, कहाँ ते लाउ लाडुए

लाली नित उठ जनमोगी पूत, कहाँ रे लाउ पियारौ....

-लोकगायक (जैतुन अब्बासी)

जन्म के बाद बच्चे के नामकरण की विधि होती है जिसमें बालक की बुआ नामकरण की रस्म करती है, बुरी नज़र से बचाने के लिए काले धागे में काले-सफ़ेद मोतियुक्त लड़ी पहनाते हैं जिसे नज़रबंद (नजरियाँ) भी कहते हैं। बच्चे के जरुले बाल उतरवाने की रस्म को 'मुंडन' कहा जाता है। जिसे ब्रज लोकजीवन में 'जनेऊ संस्कार' के नाम से जाना जाता है। जिसके संबंध में गीत प्राप्त होते हैं।

ब्रज लोकगीतों की विविधता और बहुलता का प्रमाण बहुत अधिक है। लोक जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जो ब्रज लोकगीतों की परिधि में न समाया हो। ब्रज लोकगीतों में तीज-त्यौहार के गीत,शादी-ब्याह के गीत, कृषि संबंधित गीत,देवी-देवताओं के गीत आदि प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक गीतों में समाज सुधारक गीत भी प्राप्त होते हैं, जिनमें परिवार नियोजन, बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, देश-प्रेम, नारी जागृति, भ्रष्टाचार आदि विषयों पर भी गीत मिलते हैं। पारिवारिक और कौटुंबिक जीवन को सुखद रखने के हेतु स्त्री अनेकों प्रयास करती है। पति-पत्नी, सास-बहू, भाभी-ननंद, सास-ससुर, भाई-बहन, आदि संबंध की डोर एक जगह बंधी है जिसे हम परिवार कहते हैं। ये संबंध कोमल और मधुर होने के साथ-साथ कटाक्ष और यातना से भी लिप्त होते हैं। पति-पत्नी के ऐसे ही संबंधों की वेदना का चित्रण बारहमासा के आधार पर वर्णित है –

"स्याम बिना मोय कल न परै री,

माघ मास रितु आयौ वसंत, अजहूँ न आयौ पिया तेरौ अंत।

लिखौ कैसे पाती को लैके जाय,को निरमोही कूं बतावै समुझाय

फागुन मैं सब घोरे अबीर, मै कैसे धोरूँ बिन जदुवीर।

जरौं जैसे होरी उठत जैसे लूक, बिरह आगिन तन दीन्हौ है फूँक।

चैत मास बन फूले हैं फूल, हमरौ बलम हमें गयौ है भूल।

सावन मास गरब गंभीर, हमारे नैन भरि आये हैं नीर।

जिया मेरौं डूबै उतराय, हमरौ खिवैया परदेसन छाय।"[5]

प्रस्तुत ब्रज गीत में नारी की विरह वेदना को व्यक्त करती है चैत मास उपवन में तरह-तरह के पुष्प खिलते हैं किन्तु पति उसे भूल गया है। सावन की रिमझिम वर्षा में अश्रु बह रहे हैं जैसे नदियों में बहता नीर। उसका दिल डूब रहा है ऐसे परदेस जाके उसका पति उसे भूल गया है। नारी जीवन में दु:ख की बदली सावन में ही नहीं अपितु समग्र वर्ष बारहमास बरसती है।

ब्रज लोकगीतों में ऋतुपरक गीत विशिष्ट अवसर, त्यौहार पर गाये जाते हैं। ब्रज में फागुन और सावन के मास में मनाये जानेवाले लोकोत्सव में होली प्रख्यात है फाग के लोक आराध्य राधाकृष्ण, गोपी, ग्वालबाल आदि के वाद-संवाद युक्त गीतों में मस्ती की लहर, विनंती, छेड़खानी, शिकायत आदि विषय वस्तु इन गीतों में प्राप्त होती है। सावन में महिलाएं विशालकाय वृक्ष की शाखाओं पर झूले डालते हैं और सखियों के साथ समूह में झूला-झूलते समय महिलाएं गीत गाती हैं-
ननंद-भाभी के संबंध में निम्नलिखित गीत है;

"ननदी गलियन-गलियन रै

मनिरा डोलता है।

ननदी मनिरा कौ लियौ बुलवाय

चूड़ी तो मेरी जा

न है चूड़ा हाथी दाँत का

काली तौ चूड़ी रै मनिरा नै पहनौ,

अरै मनरा काले तो मेरे राजा जी के केस

मेरे सैंया जी के केस रै

चूड़ी तो मेरी जान है....

काली तो चूड़ी रै मनिरा नै पहनौ

भूरी तौ चूड़ी रै मनिरा नै पहनौ।

रै मनिरा मेरे सैया जी के रे

चूड़ी तो मेरी जान है चूड़ा हाथी दाँत का....।"

-लोकगायक (मेहरुन्निसा एवं जैतुन अब्बासी)

प्रस्तुत गीत के माध्यम से महिलाएं अपने ननंद पर व्यंग्य करती हैं कि चूड़ी पहनाने वाले मनिहार से वे ऐसे रंग नहीं लेंगी जो उनके पति को नापसंद हो। भारतीय संस्कृति के अनुसार परिण्य सूत्र में बंधी स्त्री को पति के लिए श्रृंगार करना अनिवार्य होता है। स्त्री के विवाहिता होने के यह संकेत है जिसमें माथे पर सिंदूर, बिंदी, हाथों में काँच की चूड़ियाँ, पैरों में बिछिया आदि को धारण कर वह विवाहिता के रूप को संपूर्ण करती हैं। चूड़ी भारतीय नारी की जान है और प्रस्तुत गीत में नारी रंगों के नाम लेकर पति से उनकी तुलना करती है और हाथी दाँत का चूड़े की इच्छा ज़ाहिर करती है। इन सभी गीतों को महिलाएं इतने मर्म से गाती हैं के वेदना का सजीव चित्रण करती हैं।

सावन का एक गीत जिसमें भाई-बहन के पावन और स्नेहादिल संबंध का चित्रण किया है।

"बाजरे के खेत में दोय चिड़ियाँ चूँ-चूँ करती थी

इदर से देखूँ विदर से देखूँ मेरे कौन से भैया आय रै हैं,

क्या-क्या सौदा लाय रै हैं

मेरे (नाम) भैया आय रै हैं संग में का का लाय रै हैं,

माँ को जोड़ा, बहन को चुंदरी, भाभी को चूड़ी लाय रै हैं

इदर से देखूँ विदर से देखूँ मेरे कौन से भैया आय रै हैं।"

-(फिरदौस साबिर खान)

इसके अतिरिक्त ससुराल में यातनाओं को झेल रही महिलाएं अपनी वेदना को करुणामय स्वर में इस प्रकार व्यक्त करती है-

"उड़ि-उड़ि कागा मेरे पीहर जाओ लाओ खबर माई-बाप की

जो तक तो कागा मेरौ उड़ान न पायौ वीर लिबउआ बे आ गये,

चन्दन की चौकी मेरे भैया जो बैठे बात साजन से करी रये।

भेजौ रे भेजौ जीजा भैन हमारी, संग की सहेली झुलै बाग में..।"[6]

प्रस्तुर गीत में बहन और भाई के रुदन का उल्लेख है, बहन कौए से कहती है मायके जाकर माता-पिता का समाचार लाओ जब कौआ उड़ न सका तब तक भाई द्वार पर पहुँच गया बहन विदा कराने को भाई जीजा से अनुमति मांगता है जीजा अनुमति नहीं देता हैं और वह ससुराल में पंखहीन पक्षी की तरह छटपटा कर रह जाती है।

ब्रज लोकगीतों में विवाह संबंधी गीतों में हर्ष, उत्साह, मौज-मस्ती, छेड़खानी, हास्य-व्यंग्य, आदि भावों का समायोजन होता है जो विवाह के संस्कारों में झलकती हैं। ब्रज में भात गीतों में नारी वेदना का ऐसा चित्रण है जिसे सुनकर हृदय आप्लावित हो उठता है। यह लोक गीत भ्रातविहीन नारी अपनी वेदना रूपी चेतना को इस प्रकार प्रकट करती है-

"मेरे बाबुल जोगी माँ जूनागढ़ में भात

सासुलिया रानी मौसे गरब के बोल मति बोलै,

मेरे नाय हैं भतीजे... नाय हैं मैया के जाये

वीरन मेरी माँ है जशोदा मोकूं जन्म देकै है गई बांझ,

मेरे बाबुल जोगी......।

जिठानिया रानी मौसे गरब के बोल मति बोलै,

मेरे नाय हैं भतीजे नाय है मैया के जाये

वीरन मेरी माँ है जशोदा मोकूं जन्म देकै है गई बांझ,

मेरे बाबुल जोगी......।"

दैरानिया रानी मौसे गरब के बोल मति बोलै,

मेरे नाय हैं भतीजे नाय है मैया के जाये

मेरी माँ है जशोदा मोकूं जन्म देकै है गई बांझ,

मेरे बाबुल जोगी......।"

-लोकगायक (मेहरुन्निसा एवं जैतुन अब्बासी)

प्रस्तुत गीत भ्राताविहीन नारी के संदर्भ में हैं इस गीत के माध्यम से ससुराल में भात न आने पर वह अपने रुदन को प्रकट करती है, सास, जिठानी, देवरानी, ननंद सभी को कहती है कि मुझसे घमंड के बोल न बोलो मैं अपनी माता की एकलौती संतान हूँ मुझे जन्म देकर मेरी माँ जशोदा मैया की भांति बांझ हो गई। इस गीत में समाज की खोख़ली परंपरा और भाई न होने पर बहन को दिए गए कष्टों का उल्लेख है। समाज में कुछ समुदायों की आज भी दूषित एवं संकीर्ण मानसिकता है, पराये धन को दहेज और अन्य दकियानूसी रिवाजों के नाम से लूटना चाहते हैं। भात में भाई कीमती आभूषण, भेंट, अन्य मूल्यवान वस्तुएं उपहार में लाते हैं। जिसका भाई नहीं है उसके मायके से भात नहीं आएगा तो

ससुराल में उसे ताने देकर प्रताड़ित किया जाता है, इस गीत में ऐसी ही परिस्थिति का वर्णन वेदना रूपी स्वर से किया गया है।

ब्रज लोकगीतों शादी-ब्याह के गीतों में हल्दी, मेहँदी, तेलचढ़ाई, भात गीत आदि रस्मों के अनुरूप गीत गाये जाते हैं। शादी के गीत का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत है-

“कदम चुम्ने को चाँदनी आय रै है

काँच के पियाले मै शबनम कै मोती

अर्से बरी से छिलर मँगाए

काँच के पियाले मै शबनम कै मोती

मेरे घर मै बन्ने बन्नी आय रै है..

काँच के पियाले मै शबनम कै मोती

कदम चुम्ने को चाँदनी आय रै है

अर्से बरी से मैंने सेहरा मँगाया

अर्से बरी से मैने जोड़ा मँगाया

बांधौ मेरे बन्ने बरी आय रै है

काँच के पियाले मै शबनम कै मोती

कदम चुम्ने को चाँदनी आय रै है ।”

-जैतुन अब्बासी

विदाई के समय गाये जानेवाले लोकगीतों में करुण भाव चरम सीमा पर होता है जिन्हें सुनकर करूणालिप्त हृदय भर आता है और सबकी आँखों को नम हो जाती हैं। विवाह गीतों के उमंग के अतिरिक्त विदाई बेला पर गाये जानेवाले विदाई गीत नारी की अशेष वेदनाओं के घनीभूत आवरण से

घिरे हुए हैं । विदाई गीतों में करुण रस की अधिकता के कारण ऐसा कोई हृदय नहीं जो रुदन से भावविभोर होकर रोने लगते हैं, ये ऐसे गीत होते हैं जिससे सबको अपना अतीत वह क्षण याद आ जाता है जब वह भी अपने पीहर से ससुराल गई थी।

“काहे कौ ब्याही बिदेस रे सुन बाबुल मेरे,

हम तौ बाबुल तेरे अंगना की चिरिया चुगत-चुगत उड़ि जायै रे

हम तौ बाबुल तेरे खूंटा की गैया रे जितै हांकों हांक जायै रे...

सुन बाबुल मोरे...

भइयों कौ दीनै हैं मेहल दुमहला हमकौ दियौ परदेस रे....।”

(फिरदौस साबिर खान)

प्रस्तुत गीत में बेटी और पिता के संबंध का मार्मिक चित्रण किया है, इस गीत में बेटी अपने पिता से विदेश ब्याह ने की बात कर रही है नारी स्वयं तुलना चिड़िया और आँगन में बंधी गाय से करती है, पिता से कहती है वह आदर्श एवं आज्ञाकारी बेटी है, जहां भी विवाह करोगे वह परिणय सूत्र से बंध जाएगी किन्तु उसे परदेश क्यों ब्याह दिया ऐसे कटु प्रश्न कर अपनी परिस्थिति को व्यक्त करती है । भारतीय परंपरा के अनुसार पिता की संपत्ति में पुत्र संतान का अधिकार है उसके बाद समग्र संपत्ति का वारिस वही है । अत: लड़कियों को विवाह के समय दहेज देकर उन्हें उनका हक दिया जाता है । उपर्युक्त गीत में पिता ने पुत्र को घर और संपत्ति दी और बेटी का विवाह दूर परदेश में किया। इस गीत के माध्यम से अपनी वेदना को व्यंग्य माध्यम से प्रकट करती है।

ब्रज लोकगीतों की संपदा में श्रमगीतों का प्रमाण बहुत अधिक है लोकगीतों में विविध कार्य करता लोकमानव अपने परिश्रम के बोझ को कम करने के लिए अनायास ही गीत गाने लगता है, इन

गीतों में लोकनुभाव से गीत गायें जाते हैं, ग्रामीण किसान खेतों में अथक परिश्रम कर फसल उगाते हैं अन्य ऋतुओं की तुलना में ग्रीष्म ऋतु में यह कार्य कठिन है, रोपनी गीत गाये जाते हैं वहीं महिलाएं घर पर चक्की चलाते समय गीत गाती हैं, ओखली मूसल चलाते समय गीत गाती हैं, ग्रामीण जीवन के अथक परिश्रम एवं जीवनयापन की कठिन परिस्थितियों के वर्णन श्रम गीतों में मिलता है।
निम्नलिखित गीत ससुराल में चक्की पीसते समय किए जानेवाले श्रम को व्यक्त कर रहा है-

"पाँच पसेरी रे भैया पीसनौ
अरे भैया ज्याय पीसतई दिन जाय
कहत दु:ख वीर सो।"[7]

ससुराल में मुख्यत: बहू को सास और ननंद द्वारा मानसिक और शारीरिक रूप से कष्ट दिये जाते हैं। नारी आजीवन बिना किसी अपेक्षा के ससुराल के प्रत्येक व्यक्ति की सेवा करती है तथा कौटुंबिक जीवन को सुखद बनाने के प्रयास करती है। फिर भी कुछ घरों में आज भी बहू से उसकी क्षमता से अधिक घरगथ्थु कार्य काराए जाते हैं ऐसी ही विषम दृष्टिकोण को उपयुक्त गीत में प्रस्तुत किया गया है। इस गीत में बहन अपने भाई से अपने दैनिक कार्य के कठिन श्रम को व्यक्त करते हुए कहती है कि पाँच पसेरी अनाज उसे चक्की से पीसना होता है जिसमें उसका सारा दिन गुज़र जाता है, चक्की चलाने में अधिक परिश्रम है इसका कष्ट तो वो ही समझ सकता है जिस पर यह बीता हो हम चंद शब्दों में इस पीड़ा का वर्णन नहीं कर सकते हैं, ऐसी कष्टदायक परिस्थिति को अपने भ्राता को याद करते हुए अपनी मनोदशा और श्रम के बोझ कम करने के लिए इस गीत में प्रकट किया गया है।

नारी वेदना का चित्रण उपयुक्त गीतों में चेतना के स्वर के साथ प्रस्तुत किया है। आधुनिक युग नारी आज भी ऐसी परिस्थितियों से जूझ रही है। आज जीवन के मूल्य, रहन-सहन, तथा परिवेश बादल चुका है। फिर भी नारी की स्थिति में कोई सुधार नहीं है। नारी का जीवन पति एवं परिवार की

सेवा में दासी के रूप में व्यतीत होती है। इस दासता को नारी ने अपना भाग्य समझा। स्वामी और दास की परंपरा शुरू हो गई, समयान्तर के बाद शिक्षण की ओर जागृत होकर नारी अपने अधिकारों के लिए खड़ी हुई और अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने लगी। लोकगीतों में वेदना को महिलाएं प्रकट करती हैं।

➢ ब्रज लोकगीतों में नारी चेतना का स्वर

ब्रज लोकगीतों में नारी जीवन की विविध समस्याओं का उल्लेख मिलता है। जिसमें सामाजिक समस्याएं, पारिवारिक समस्याएं, व्यक्तिगत समस्याएं, आर्थिक समस्याएं आदि को लोकगीतों के माध्यम से प्रकट करने में महिलाएं सफल हुई है। वैदिक काल से ही नारी की स्थिति अति दयनीय रही है। भारतीय समाज सदियों से पितृसत्तात्मक विचारधारा को ढ़ोहता चला आ रहा है, पितृसत्तात्मक सोच ने नारी के अस्तित्व और अधिकारों का हनन किया है। जन्म से लेकर मृत्यु के पश्चात मोक्ष प्राप्ति तक पुरुषों पर पराश्रित रहती हैं, आर्थिक रूप से पूरी तरह पुरूषों पर निर्भर रहना यह हमारी संकीर्ण और संक्रमित विचारधारा का परिणाम है के आज भी नारी सशक्त न हो सकी है। कौमर्यावस्था से वृद्धावस्था तक नारी के संघर्ष की यात्रा चलती रहती है। इस सफर की पीड़ा, वेदना असीम है नारी के संघर्ष उसकी प्रौढ़ावस्था से ही प्रारंभ हो जाते हैं, विवाह न होना, कद कम होना, श्याम रंग होना, आदि समस्याओं से नारी का अस्तित्व जुझता रहा है। विवाह से बाद ससुराल और पति द्वारा प्रताड़ित किया जात है, सास द्वारा दी गई पारिवारिक जिम्मेदारियों को नारी संघर्षशील होकर निभाती है। लोकगीतों में ऐसी न जाने कितने अत्याचारों से पीड़ित महिलाओं के कष्टों का उल्लेख मिलता है। त्याग, प्रेम, बलिदान, कुंठा, तनाव, भटकाव इत्यादि विषयवस्तु लोकगीतों में मुख्यत: प्राप्त होती है। ससुराल में सास-ननंद द्वारा बहू अनगिनत यातनाओं से अवगत कराया जाता है आदर्श नारी वही है चुपचाप अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों को सहती रहे किन्तु लोकगीतों में जनजीवन की अखंड संपत्ति है, और इन्हीं को माध्यम बनाकर अपनी नारी चेतना को प्रकट करती है, यहाँ पढ़ी-लिखी स्त्रियों का वाग्जाल नहीं है यह तो अशिक्षित नारी है जो स्वानुभूति को स्वरमय कर अपनी वेदना को प्रकट करती है। ब्रज लोकगीतों में नारी की वेदना चेतना रूपी स्वर से व्यक्त हुई है।

पारिवारिक विघटन और संबंधों के संदर्भ में ब्रज के निम्नलिखित लोकगीत हैं-

"ननदुल तेरौ जइयो नासु कै रावनु कौरे पै कढ़वायौ

भैयन कूं दिखराइ कै हमकूं वनोवासु दिलवायौ।"[8]

पारिवारिक संबंधों की प्रगाढ़ भावना और परस्परिक स्नेह का चित्रण विभिन्न लोकगीतों में मिलता है। ब्रज लोकगीतों अंतर्कथाओं का सुंदर प्रयोग मिलता है, ससुराल में ननंद की भूमिका अहम होती है, भाई-भाभी के संबंधों को बिगाड़ने का प्रयास मुख्यत: ननंद द्वारा ही होता है, प्रस्तुत गीत में लोकप्रचलित संदर्भ को माध्यम बनाकर सीता की ननंद ने रावण और सीता को एक साथ राम को दिखा दिया जिसके राम ने क्रोधित होकर सीता को घर से निकाल दिया। वैदिक संदर्भों की आड़ में महिलाएं अपनी आपबीती को गीत के माध्यम से प्रकट करती है।

अधिकांश लोकगीतों की भावभूमि महिलाओं के निजी अनुभव से प्रेरित होती है, इन गीतों में नारी मन की प्रत्येक अनुभूति का विवरणात्मक उल्लेख मिलता है। पति-पत्नी के संबंध प्रेम, मस्ती, छेड़खानी के साथ तनाव, कुंठा, मनमुटाव से युक्त ब्रज लोकगीत प्राप्त होते हैं। गृहिणी का जीवन हो, कामकाजी महिला का अनेक मुश्किलों और उलझनों से घिरा हुआ है जिसका उल्लेख नारी द्वारा जीवन के दु:ख-सुख, विरह वेदना, पारिवारिक विघटन, पितृसत्तात्मक विचारधारा के प्रति आक्रोश आदि भावों को लोकगीतों में प्रकट किया। गेयात्मक रूप में नारी की चेतना व्यंग्य के सहारे प्रकट हुई है। पति द्वारा पत्नी को अनेकों रूप से प्रताड़ित किया जाता है इन सभी वेदनाओं का वर्णन ब्रज लोकगीत में प्राप्त हुआ है।

"चिड़ी तौय चामलीया भावै

घर की नारी छोड़ पिया जी

कूं पर नारी भावै

सहर के सोय गए हल्वाइया

अब तोय मुखड़ा खोल कलाकंद लाय दों प्यारी ।"

-नगमा बानो

प्रस्तुत लोकगीत नारी अपने पति पर व्यंग्य करते हुए कहती है कि उसे अपनी पत्नी का सलौना रूप नहीं भाता उसे बाहर की तिरिया चरित्र वाली नारी सुहाती है, स्त्री और पुरुष के लिए चरित्रवान होना एक गुण और संस्कार है लेकिन कुछ महिलाएं और आदमी इसे ताक में रखकर अर्थात् चरित्रहीनता को अपना मनोरंजन का साधन बना लेते हैं। अपनी पत्नी को सताने हेतु पुरूष यहां-वहां मुँह मारता फिरते हैं। इन लोकगीतों से पत्नी अपने पति के लिए कटाक्ष भाव प्रकट करती है। लोकगीतों की गुणवत्ता और रसात्मकता को सजीव रखने का श्रेय हमारी माँ-बहनों को है। हास्य-व्यंग्य कर नारी अपनी चेतना को प्रकट करती है, बचपन से ही अभिव्यक्ति के अवसर की खोज में रहनेवाली महिलाएं अपनी सारी कथा हास्य-व्यंग्य के माध्यम से कह देती हैं। ब्रज की नारी हास्य रस में दो कदम आगे है। खोरीया,नाच एवं गारी गीतों के कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं-

"छोरा लै चल खाट वरी के नीचै तेरी व्यार करौंगी रे

सासऊ सोवै ससुराऊ सोवै

दैया मेरी लाग गई आँख

बलम मेरे कौ भीडया लैगा

सासऊ ढूँढे ससुराऊ ढूँढे

दैया मेरा ढूँढे सींघ

सवेरा होते ही और करूँगी रे...

छोरा लै चल खाट वरी के.....

जेठउ ढूँढे जिठनी उ ढूँढे

दैया मेरा ढूँढे सींघ

सवेरा होते ही और करूँगी रे...

छोरा लै चल खाट वरी के नीचै तेरी व्यार करौंगी रे।"

लोकगायक -(मेहरुन्निसा एवं जैतुन अब्बासी)

प्रस्तुत गीत में नारी अपने पति को पेड़ के नीचे प्रेम के मूल्यवान क्षण बिताने को कहती है और ग्रामीण क्षेत्रों में भीषण गरमी होती है बिजली का कोई ठिकाना नहीं होता इसलिए अधिकांश लोग छायादार वृक्षों के समीप रहकर राहत पाते हैं इस गीत में ऐसी ही परिस्थिति का वर्णन है पति की हवा करते-करते उसकी आँख लग गई और पति को भेड़िया उठा ले गया सास-ससुर, अन्य परिवार के सदस्य पति को ढूंढने जाते हैं लेकिन यहां नारी व्यंग्य के माध्यम दूसरा विवाह करने की चेतावनी देती है। इस गीत में पति के दूसरा विवाह या अन्य नारी के साथ नाजायज रिश्तों पर व्यंग्य है जिससे महिलाओं को आजीवन डर के साये में रहना पड़ता है न जाने कब ये दूसरा विवाह कर ले अन्य किसी स्त्री से संबंध न बनाले ऐसी स्थिति से नारी मानसिक उत्पीड़न का शिकार होती है। इस गीत में नारी की चेतना कहती है की वह दूसरा विवाह करेगी और पति को नहीं ढूंढेगी।

खोरीया नाच का देवर-भाभी प्रसंग का के सुंदर गीत इस प्रकार है –

"लगैयौ दैवर अंगना मै बबूली रे

जब बबूली हम सूतन चले रे

लगा है दैवर उंगली में काँटा रे...।

लगैयौ दैवर अंगना मै बबूली रे

पाँच रुपैया दैवर हौम तोय दिंगै

निकारौ देवर उँगरी का काँटा रे...।

लगैयौ दैवर अंगना मै बबूली रे

पाँच रुपैया भाभी हम नाय लिंगै

न निकारै उँगरी का काँटा रे...।

लगैयौ दैवर अंगना मै बबूली रे

आज जो भैया तेरा घरै होता

कराती देवर पसुलियन कै टुकरे रे

लगैयौ दैवर अंगना मै बबूली रे.....।"

लोकगायक - (जैतुन अब्बासी)

इस गीत में देवर-भाभी कथोपथन हैं। ब्रज क्षेत्र में खोरीया नाच में महिलाएं नाटक खेलती है और पुरुष का स्वांग करती हैं इन गीतों में गाली गलौज के साथ शादी के बाद नारी के साथ होनेवाली परिस्थितियों का विवरण मिलता है। इस गीत में भाभी देवर से मिन्नतें करती है के उसकी ऊँगली में लगे काँटे को निकाल दे लेकिन देवर उसको दुनिया भर के बहाने बताता है और उसकी मदद नहीं करता है। जिस पर आक्रोश में आकर भाभी कहती है के आज तुम्हारा भाई घर होता तो तुम्हरी पसुली से टुकड़े करवा देती।

पति-पत्नी के हास्य-व्यंग्य का सुंदर उदाहरण-

"मेरे राजा रोये रात कढ़ी कै मारे,

सासुल लाई लकरी ननदी लाई कंडे

मेरे राजा लाए आग कढ़ी के मारे

मेरे राजा रोये.....।

सासुल लायी हरदी ननदी लायी धनिया

मेरे राजा लाये मिर्च कढ़ी के मारे

मेरे राजा रोये.....।

सासुल लायी थरिया ननदी लायी बेल

मेरे राजा लाये नांद कढ़ी के मारे

मेरे राजा रोये.....।

सासुल फूँकै अंगूरी ननदी फूँकै पौंचा

मेरे राजा चाटे मोंछ कढ़ी के मारे

मेरे राजा रोये.....।"

लोकगायक - (मेहरुन्निसा एवं जैतुन अब्बासी)

भारतीय परंपरा में सुसंगत विवाह को अधिक महत्व देते हैं जिसमें माता-पिता द्वारा अपने बच्चों के लिए जीवन साथी का चयन किया जाता है। ग्रामीण लोकजीवन में विवाह दो मानव का नहीं दो परिवारों का मेल है किन्तु कई बार अनमेल विवाह की समस्या से न जाने कितनी ही स्त्रियों का जीवन नरक बन गया है। अनमेल विवाह की समस्या को निम्नलिखित गीत में वर्णित किया गया है-

"जा बावरै से लगुन लिखाय गई मेरी मैया

एक मरा सा पड़रा खूँटे से बंधवाय गई मेरी मैया

जे हल जोतन कौ है जाएगौ नों कह गई मेरी मैया

जा बावरै से लगुन.....।

एक मरा सा लल्ला गोदी में धरवाय गई मोरी मैया

जे नाम चलन कौ है जाएगौ नों कह गई मेरी मैया।

जा बावरै से लगुन.....।

एक फटा घुटन्ना पेटी में रखवाय गई मोरी मैया

जे आन जान कौ है जाओगों नों कह गई मेरी मैया।

जा बावरै से लगुन.....।"

लोकगायक -(मेहरुन्निसा एवं जैतुन अब्बासी)

लोकगीतों का आशय लोकजीवन की गहराई से जुड़े हुए उन लोकनुभाव से है जो जीवन के हर एक क्षण में व्याप्त है। लोकजीवन का सार लोकसाहित्य है लोकगीत समाज का अभिन्न अंग है और समाज में संस्कृति का प्रचार-प्रसार लोकगीतों के बिना असंभव है। लोकगीत जीवन के लिए दुरूह आवश्यक है। सोलह संस्कार के समय मंगलोत्सव पे गाये जाते हैं वे संस्कार गीत हैं, गर्भाधान से प्रसव तक की यात्रा का वर्णन लोकगीतों में मिलता है। महिलाएं अक्सर अभिव्यक्ति के अवसर ढुंढ़ती रहती हैं ऐसे मौको पर उपदेश के साथ ही अपने चेतना रूपी संदेश को गीतों के अखरे से गाकर व्यक्त करती हैं।

"जे घर कन्या होय अछूतौ नाँय खाइयौ।

जे घर लक्ष्मी होय उधारौ नाँय लाइयौ।

जे घर दीपक होय अंधरों नाँय रहियौ।

जे घर गोरस होय तौ रुखौ नाँय खाइयौ।

जे घर घोड़ी होय तौ पैदल नाँय जाइयौ।

जे घर भैया होय अकेलौ नाँय चलियौ।"[9]

ब्रज में सोहर के समय पर गाये जानेवाले गीत का एक उदाहरण उपर्युक्त दिया गया है, इस गीत के माध्यम से सामाजिक मूल्य और मान्यताओं का महत्व धार्मिक रूप से बताया गया है भारत में कन्या का जन्म अर्थात लक्ष्मी आगमन जिसे धन-संपत्ति से संबोधित किया जाता है। पुत्र जन्म के अवसर पर

गीत गाना और ब्रज में घरों में उत्सव का माहौल होता है किन्तु वहीं कन्या के जन्म पर गीत गाना और अन्य संस्कार कर्ण छेदन आदि करना ऐसे दर्शन दुर्लभ हैं।

"जब लाडो तैने जन्म लियौ भई अंधेरी रात।

जिस दिन बाबुल जन्म भयौ भई उजेरी रात।

एक सौ इकसठ दिये जले, महलों में जगमग हुई हौंस की रात।

जा दिन लाडो ने जन्म लियौ, सवा हाथ धरती धँसी।

दादा-दादी रिंज भयौ , चाची ताई को रिंज भयौ।"[10]

प्रस्तुत गीत में कन्या जन्म पर शोक का चित्रण किया है इस गीत के अनुसार बेटी के जन्म हों एसे अंधेरा हो गया यदि पुत्र होता तो उजाला होता और महल में एक सौ इकसठ दीये जलाकर जगमग रोशनी होती लड़की के जन्म होने के कारण परिवार के सदस्यों को दु:ख हुआ है। ग्रामीण लोकमानव अशिक्षित, असभ्य है फिर भी कन्या भ्रूणहत्या को नहीं सराहता उसे वह जघन्य अपराध समझता है। लेकिन शिष्ट समाज का शिक्षित आधुनिकता का चोला पहने लोग गर्भाधान में चिकित्सा के बहाने से लिंग परीक्षण कर कन्या भ्रूणहत्या को अंजाम देते हैं। ग्रामीण समाज की तुलना में शिष्ट समाज में पुत्र प्राप्ति की लालसा एवं कन्या भ्रूणहत्या के मामले अधिक देखने को मिले हैं।

"बाबाजिन हैंकें निकरि जाऊँगी सास तेरे बोलन पै

हाय वैरागन हैंकें निकरि जाऊँगी सास तेरे बोलने पै

यों मत जानें सासुल नंगी चली जाऊँगी

तेरे बेटा पै चूनर मंगाय लाऊँगी। सास तेरे बोलने पै.....।

यों मत जानें सासुल भूखी चली जाऊँगी

तेरे बेटा पै रबड़ी मंगा लाऊँगी, सास तेरे बोलने पै.....।

यों मत जानें सासुल घरै छोड़ि जाऊँगी

अपने हिस्सा कें तारौ लगाय जाऊँगी। सास तेरे बोलने पै.....।

यों मत जानें सासुल इकली चली जाऊँगी

तेरे बेटाय संग में लै जाऊँगी। सास तेरे बोलने पै.....।"[11]

इस गीत में सास की क्रूरता का उल्लेख किया है, विवाह के बाद ससुराल पक्ष के पुरुष व स्त्री बहू को कष्ट देना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं, कितने ही घरों में नवविवाहिता के कंधो पर पारिवारिक कामकाज के बोझ को लाद दिया जाता है। जिसे कई महिलाएं निभा नही पाती और आत्महत्या के लिए बाधित हो जाती हैं। सास-ननंद एवं पति द्वारा उसे रोज अलग-अलग यातनाएँ दी जाती है। अपनी ऐसी स्थिति को वो बदल तो नहीं सकती किन्तु अपनी दारुण अवस्था को लयात्मक रुप से लोकगीत से प्रस्तुत करती है। इस गीत में बहू सास से कहती है कि वह उसके निकालने पर घर छोड़ के नहीं जाएगी यदि गई तो अपने हिस्से में ताला लगाकर अपने पति को भी साथ ले जाएगी। यहाँ नारी ने अपनी चेतना का परिचय दिया है जिसमें वह सास को अपने पुत्र से दूर करने की धमकी देती है ।

"सखि री अनपढ़ कूं ब्याह दई जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ

जेठ मेरौ है गयौ एम. ए. पास, देवर मेरौ है गयै बी. ए. पास

अरी बू तौ गूँठा टेका - जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.....

जेठ मेरौ ऑफिस कूं जावै, देवर मेरौ दफ्तर कूं जावै

अरी बू तौ हर पै जावै,- जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.....

जेठ मेरौ है गयौ थानेदार, देवर मेरौ बनि गयौ तहसीलदार

अरी बू तौ मुँह कौ देखा,- जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.....

जेठ मेरौ लावै पाँच हजार, देवर की इतरावति नारि

सखी बू तौ जेब टटोरा,- जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.....

साक्षर करि रही है सरकार, केंद्र पै पहुँच छोड़ हर फार

देख तोय पढि जाय छोरा,- जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.....”[12]

इस गीत में अनमेल विवाह कि समस्या को दर्शाया है, इस गीत में अनपढ़ के साथ विवाह होने के बाद आर्थिक और सामाजिक समस्याओं से किस प्रकार नारी का अस्तित्व जूझता है उसका चित्रण है। पारिवार में जेठ, देवर पढ़ लिखकर उच्च शिक्षण एवं योग्यता के आधार पर सरकारी नौकरी पर नियुक्त होकर समृद्ध जीवन व्यतीत करते हैं। जबकि उसका अनपढ़ पति खेतों में हल चलाकर खाली जेब टटोलता रह गया। यहाँ नारी अनमेल विवाह और शिक्षण की अनिवार्यता पर व्यंग्य कर अपनी चेतना को व्यक्त करती है।

सास-बहू का झगड़ा अनायास छोटी-छोटी बातों पर हो जाता है और तुच्छ बातों के लिए बहू को उसके मायके और माँ-बाप के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया जाता है। औरत ही औरत का दुख दर्द समझ सकती है लेकिन इस कथन के विपरीत एक औरत ही औरत की शोषक है। पति-पत्नी के आपसी मनमुटाव को हिंसा में बदलने वाली औरत ही है। इसी चुगली, घरेलु राजनीति और ईर्ष्या-द्वेष, घृणा के कारण घरेलू हिंसा का शिकार गृहिणी होती है। सारा दिन कामकाज में इतना व्यस्त रहती है फिर भी काम न करने के ताने मिलते हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों को नारी ने लोकगीतों में विरोध और आक्रोश के साथ बयान किया है-

“काऊ दिन देख लाऊँगी सासू

तैनें बहुत सतायौ मोय।

हाँ तैनें बहुत खिजायौ मोय ,

तैनें बहुत रुवायौ मोय । काऊ.....

दिन-दिन भर मोसौं चाकी चलवाई

खावन दियौ नांहि कौर । काऊ.....

लै रसरी मोहि कुइयाँ भेजौ

संग कपड़न की पोट ।

धोवत-धोवत सांस उखर गई

मैं है गई बेहोस । काऊ दिन.....

बारी उमर मोहे ब्याह कें लाई

गज भर घूँघट और ।

तपती धूप ढोरन संग भेजी

खुद सोई ज्वारयां ओट । काऊ दिन....

बात-बात मोहे गुलचा मारै.

ऊपर से धक्का धोर

अब तौ तेरी एक सुनूँ ना

बहुत सता चुकी मोय । काऊ दिन.....”[13]

ससुराल की पारिवारिक जिम्मेदारियों को नारी संघर्षशील बनकर निभाती है । प्रस्तुत गीत में सास द्वारा दिये गये कष्टों का उल्लेख किया गया है । चक्की पीसना, कपड़े धोना, खेत खलिहान के कार्य, गाय, भैंस के साथ दोपहरी में भोजन भेजना आदि घरेलु कार्यों के साथ मानसिक एवं शारीरिक यातनाओं का वर्णन इस गीत में हुआ है । पीड़ित नारी अत्याचारों से भलीभाँति परिचित है, इसीलिए

वह अपनी वेदना को चेतना के स्वर से व्यकत करती है और कहती है कि सास तुने बहुत रुलाया सताया लेकिन अब यह अन्याय नहीं सहुंगी और एक दिन तुझे देख लूँगी।

पति एवं सास-ननंद द्वारा बहू को प्रताड़ित किया जाना आम बात बन गई है। घरेलु कामकाज की व्यस्तता से वह अपना आप भुल जाती है, नारी का अस्तित्व घर की चार दीवारों में सिमटकर रह गया है। नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरुक है सजग है और अन्याय के विरुद्ध डट कर खड़ी है । इन गीतों के माध्यम से अपनी सहज भावाभिव्यक्ति को प्रकट करती है।

शिक्षण संबंधित गीतों में नारी चेतना के साथ सामजिक संदेश की गूंज ब्रज लोकगीतों में सुनाई देती है। कुछ उदाहरण निन्मानुसार है,

"प्यारी है रहयौ भारी हेला, लग रहयौ साक्षरता कौ मेला अपने काम कूँ।

मैं तौ करुंगी पढाई, अपने नाम कूँ।।

दुनियाँ दै रही है जैकारौ,

पढ़िवे आय गयौ हरवारौ।

मैंने सिगरौ काम संवारौ।

मोते कहन लगौ घरवारौ, चोखे काम कूं।

मत जइयौ तू सकारे, अपने गांव कूँ ।।

मैं तौ करुंगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ ।।

पोथी पढ़-पढ़ बने पटवारी,

उनकी इतरावैं घरवारी

पढ़िकै इज्जत होय हमारी,

पीछे क्यों राखिंगी नारी, अपने पांव कूँ ।।

मैं तौ करुंगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ ।।

औडर आय गयौ सरकरी ।

अनपढ़ नाँय रहिंगे नर-नारी ।

जड़ता की जंजीरे कट रही,

पोथी चौपारन पै बँट रहीं, सिगरे गांव कूँ।

जब जनता कौ हियरा जागै ।

डंकल पूंछ दबायकैं भागै

सिगरे मिट जाँएगे घोटाले ।

नेतन के होंगे मुंह काले, पद के नाम कूँ ।"[14]

प्रस्तुत गीत में शिक्षण की अनिवार्यता का उल्लेख किया गया है । नारी समाज में अपने स्थान से भलिभांति परिचित है इसीलिए वह अपने अधिकारों और शिक्षण के हक के लिए जागृत हो गयी है । अपनी परिस्थितियों को बदलने हेतु तरक्की के आसमान में पतंग बन उड़ना चाहती है शिक्षण की डोर से वह अपने जीवन को सफल बनाना चाहती है । इस गीत में महिलाओं ने सामजिक एवं तात्कालीन परिस्थितियों के मद्देनज़र इस लोकगीत का ताना- बाना बुना गया है । पुस्तक पढ़ कर वह पटवारी बने पुरुष की नारी इतराती है अब वह पीछे नहीं रहेगी जड़ता की जंजीरें काट अब वह पढ़ना चाहती है । साक्षरता से अंधकार मिटेगा और न्याय होगा । शिक्षा की अनिवार्यता को नज़र अंदाज करने से देश में राजनीति का हाल ऐसा है । इस गीत में नारी की चेतना ही है जो नेताओं द्वारा किये जानेवाले घोटालों को प्रकाशित करना चाहती है तथा पढ़ लिखकर वह उस पद को प्राप्त कर जनता का उद्धार करना चाहती है ।

"नारी मेरी पढ़ये ते तू काहे रही घबराय ।

अनपढ़ जन कौ नाँय जमानौ, रयौ तोय बतराय ।

मानव कौ कल्पान जगत में, ज्ञान बिना है नाँय ॥ नारि मेरी.....।

बिना पढ़ै की बड़ी मुसीबत, दुविधा में पर जाय ।

जैसैं आँधौ मूसौ घर में, भरभेरी सी खाय ॥ नारि मेरी.....।

परै जरुरत जब रुपियन की, झट उधार लै आय ।

होंय ब्याज के आठ परंतु, तू अस्सी दै आय ॥ नारि मेरी.....।

ह से हिंदू , म से मुसलमान, ए से एक बनाय ।

ग से गंगा, ज से जमुना मैया, हियरा में लहराय ॥ नारि मेरी.....।

प से परिवार नियोजन बोलै, भ से भारत माय ।

स से साक्षरता अपनाबैं, जनम सफल है जाय ॥ नारि मेरी.....।"[15]

इस गीत में नारी ने शिक्षा को जीवन का आधार माना गया है। आधुनिक युग में शिक्षा एक दायित्व है समाज को नई उन्नति एवं नवीन प्रगति देने का श्रेय शिक्षा को है। आज के निरक्षर व्यक्ति समाज में जीवन निर्वाह कठिनाई से करते हैं। रोजमर्रा की विभिन्न क्रियायों में शिक्षा की अनिवार्यता को नज़रांदाज नहीं किया जा सकता है। शिक्षित व्यक्ति समाज में अपना गुजारा कर सकता है किंतु अशिक्षित व्यक्ति को अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। आज के समय में ग्रामीण लोकमानव शिक्षण को महत्त्व देता है तथा इसकी अनिवार्यता से आज कोई भी परिवार वंचित नहीं रहा है। उपर्युक्त लोकगीत में वर्णमाला के कुछ वर्णों का प्रयोग कर गीत को प्रभावशाली बनाया गया है। साक्षरता से ही नारी अपने जीवन को सफल बना सकती है तथा रोजगार प्राप्त कर आर्थिक रुप से स्थायी बना सकती है।

"काका मेरी बात मानों, थोर-थोरौ तौ पढ़ौ ।

तिखन लौं पहुँचौगे, सीढ़ी पहिली तौ चढ़ौ ॥

सबते साँचौ विद्या कौ धन, सकल कलेसन काटै ।

चोर न जाकूँ चोर सकै. कोई भाई बंधु न बाँटै ॥

चेंटी चलै पहाड़े नाखैं करतब की बलिहारी

देहरी कूँ नाँखौ घरते बाहिरे कढ़ौ ।

काका बात मेरी मानों.....

विद्या ही सबकौ अमोल धन, नर होवै चाहि नारी ।

बिना पढ़े कोऊ बात न पूछै, रोज-रोज की ख्वारी ॥"[16]

लोकगीत नारी के जीवन कि वह अभिवव्यक्ति हैं जिसके एक-एक शब्द में महिलाएं अपने सुख-दु:ख, दांपत्य जीवन के विषाक्त संबंध को वर्णों की अमुल्य माला में गूँथ कर गाती है। नारी हमेशा से अपने साथ होते अत्याचारों, शोषण, आदि के प्रति जागरुक रही है, जिसका आक्रोश चेतना रूपी स्वर में लोकगीतों में प्रस्तुत हुआ है।

इतिहास में नारी को कभी सम्मान प्राप्त नहीं हुआ। "इतिहास एवं पुराणों में स्त्री का स्थान नगण्य है। हर कहीं उसे पुरुष की अनुगामिनी का स्थान मिलता है। पितृसत्ता का स्वरुप इतना जबरदस्त था कि स्त्री, मात्र पुरुष की छाया रह गई थी। सेमेटिक धर्म में पुरुष की हड्डी से स्त्री के निर्मित होने का वर्णन है। परवर्ती दौर में अरस्तु जैसों विद्वानों ने बताया कि स्त्रियाँ कुछ बातों में पुरुषों से पीछे हैं। उनमें गुणवत्ता नहीं है।"[17] ऋषिमुनी हो या विद्वान सभी ने नारी को घृणा की दृष्टि से देखा किसी ने मार्ग से भटकाने वाली कहकर सम्बोधित किया तो किसी ने अपमानित शब्दों का प्रयोग आज भी गाली-गलोज के माध्यम से स्त्री की अस्मिता को खंडित करता रहा है।

ब्रज लोकगीतों में सांस्कृतिक एवं विभिन्न अवसरों गाये जानेवाले गीतों में अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती महिलाओं ने सत्य को उदघाटित किया तथा परिस्थितियों को यथावत यर्थाथ चित्रण किया है. पिता और पुत्र-पुत्री के संदर्भ में, पुत्र जन्म एवं पुत्री जन्म के अवसर पर गाये जानेवाले सोहर गीत, माँ-बेटी के करुणात्मक गीत, भाई-बहन के गीत, पति-पत्नी (प्रेम,विरह,वियोग) के गीत, ननंद-भाभी, सास-बहू, देवर-भाभी, आदि ससुराल पक्ष के गीत आदि गीतों में नारी ने अपनी वेदना को चेतना रुपी स्वर के साथ प्रकट किया है।

➢ ब्रज लोकगीतों में नारी अस्मिता का बोध :-

पुरुषप्रधान समाज ने पुरुषों को सिंघासन पर राज करने और नारी को चरणों में जीवन व्यतीत करने को जीवनोद्धार बताया। "पितृसत्ता पुरुषकेंद्रित व्यवस्था है जिसमें स्त्री दुसरे दर्जे में उपेक्षित रहती है। स्त्री का दोहरा दर्जा सामाजिक उन्नयन का विरोधी तत्त्व बन जाता है। प्रतिरोधी अभियान के रूप में रेडिकल नारीवाद लिंग के साथ वर्ग, वर्ण, सौंदर्य, यौनता, क्षमता आदि बिंदुओं पर भी व्यापक चर्चा करता है। पितृसत्तात्मकता के राजनीतिक प्रतिकार के रूप में इन्होंने स्वस्थ एवं साझेदारी में व्यस्त समलिंगीय सम्बंधों को सामने रखा।"[18] नारी अस्मिता को समाहित करनी का श्रेय आंदोलनकारी सामाजिक कार्यकर्ताओं ने किया उन्होंने बलात्कार, यौन शोषण, घरेलू हिंसा, आदि का विरोध कर नारी के अधिकारों और उसकी अस्मिता को सहजने का प्रयास किया।

"जाति-धर्म तथा लिंग-वर्ग के परे संवैधानिक समता के अधिकार होने पर भी पितृसत्तात्मक समाज में रहने वाली भारतीय स्त्रियों को सुरक्षा प्राप्त नहीं होती है। बेमतलब एवं अवैज्ञानिक नैतिक मापदंडों को उछालकर आज भी खाप पंचायतें प्रेम-विवाह रोकती हैं। रोजगार, राजनीतिक या धार्मिक कार्यों में वर्जनाएं आज भी स्त्रियों पर थोपी जाती हैं। 'मोरल पोलीसिंग' की अनहोनी महानगरीय घटनाएँ सूचित हैं। अंध-पुत्रमोह, कन्या भ्रुणहत्या, स्त्री जन्म-दर में गिरावट, बालिका-विवाह, बालिका ट्राफिकिंग, अवयस्क मातृत्व, गर्भपात की समस्याएं, विवाह में निर्णय न लेने की स्थितियाँ, कामकाजी स्त्रियों पर भेदभावपूर्ण रवैया, यौन-शोषण आदि अनेक समस्याएँ हैं जो विविध उम्र में स्त्रियाँ झेलती हैं। स्वास्थ्य रक्षा, परिवार नियोजन, एड्स निवारण आदि में स्त्रियों को उपकरण के रूप में इस्तमाल किया जाता है। राष्ट्रीय स्तर पर स्त्री-हनन के आँकड़े बढ़ जाती है। तारतम्यमूलक दृष्टि में आज भी भारतीय कामकाजी क्षेत्र में स्त्रियों की समान भागीदारी नहीं है।

इसलिए आरक्षण की माँग की जाती है। राजनीति, प्रशासन, सुरक्षा, आदि के क्षेत्रों में स्त्री-प्रतिनिधित्व को बढ़ाना है।"[19] नारी की अस्मिता को केंद्र में रखकर भारत में सुधार कार्य भी हुए है।

भारतीय समाज में कुछ कुरीतियाँ हैं जिनके कारण ही समाज ने नारी को बोझ की संज्ञा दी है। इन में एक है दहेज प्रथा। भारतीय परिवारों में दहेज एवं विवाह की चिंताएं पुत्री जन्म के साथ ही अंकुरित हो जाती है। पुत्र जन्म पर मिठाई का वितरण और ढोल ताशो की गूँज से सभी को ज्ञात हो जाता है कि कुलदीपक का जन्म हुआ है। वहीं पुत्री के जन्म पर उदासी का माहौल छा जाता है। ऐसी मान्यताएं आज भी समाज में हैं कि बिना पुत्र की माता का जीवन व्यर्थ है, गर्भ की सारथकता का प्रमाण पुत्र जन्म के बाद ही संभव है, ब्रज में इस संदर्भ में निम्नलिखित गीत की एक पंक्ति उपलब्ध है-

"बाग मैं पपइया बोलै, बिना पुत्तर की मइया रोबै।"

जिस नारी ने पुत्र को जन्म नहीं दिया उसके भाग समझो फुट ही गये ब्रज में ऐसी नारी के लिए एक युक्ति प्रचलित है-

"मेरे फूटे भाग पूत मेरी गोद न आयौ।"

भारतीय समाज में पुत्र प्राप्ती सौभाग्य है जिसका सबसे बड़ा कारण हमारे संस्कार है। वंश को बढ़ाने वाले बेटे का परिवार में अलग ही महत्त्व होता है जिसके बिना अंतिम संस्कार की विधि सम्पन्न नहीं हो सकती ऐसे पुंशवाहक प्राप्त कर महिलाएं खुद को सौभाग्यवती समझती हैं । ब्रज की एक कहावत है "खोटौ पैसा अरु खोटौ पूत समै पै काम आवै है" ब्रज में कहा जाता है कि खोटा सिक्का और खोटा पुत्र समय पर काम आता है। बेटे के जन्म पर परिवार में उत्सव का माहौल होता है वहीं बेटी के जन्म पर परिवार में उदासी का माहौल होता है। बेटी के जन्म से ही पिता की चिंताएं आरंभ हो जाती है। जन्म से ही बेटी को पराया धन कहकर पुकारा जाता है ये तो पराए घर की लक्ष्मी है आदि शब्दों की संज्ञा से नारी का अस्तित्त्व अलंकृत किया गया है। विवाह होने तक कन्या के परिवार को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। समाज में दहेजप्रथा एक ऐसी विचारधारा है जो संक्रमण की

तरह फैल चुकी है जिससे कोई भी मनुष्य अछूता नहीं है। शिक्षित नौकरीवाला वर खोजने के बाद पिता अपनी सम्पत्ति गिरवी रखता है या बेच देता है ताकि उसकी बेटी सुखी व समृद्ध परिवार में जीवन व्यतीत करे। दहेज प्रथा के कारण बेटी के पिता को सर झुकाना पड़ता है उनकी विवशता का हम आंकलन भी नहीं कर सकते हैं। ऐसी करुणावस्था को इस गीत की कुछ पंक्तियों से प्रस्तुत किया है –

"मैया नैं दीने अन-धन कंगना, बाबुल नैं दिनौं दहेज।

मैया के रोये नदी बहति, बाबुल रोए सागर-ताल।"[20]

ब्रज के विभिन्न गीतों में नारी की अस्मिता का बोध वृतांत वर्णन प्राप्त हुआ है। पति-पत्नी संबंधी गीतों में महिलाएं पुरुषों पर व्यंग्य करती नज़र आती हैं। इस क्रम में कुछ गीत निम्नानुसार हैं –

मसखरी करते हुए ब्रज की नारी अपने पति को दूजा विवाह और जीवन में उसके आनेवाली बाधाओं से अवगत कराती है। साथ ही चेतना रूपी स्वर से अपनी अस्मिता के लिए आवाज उठाती है।

प्रस्तुत गीत की पंक्तियों से महिलाएं अपने पति को बदलने की धमकी देते हुए कहती है-

"बदलुंगी बलमा तोय काऊ दिन जुल्फंवाले छैला से"

अर्थात् पत्नी पति से कहती है के वह उसे बदल देगी जुल्फवाले (अच्छे सुंदर केश) वाले प्रेमी से

ब्रज लोकगीत में ताने की धुन पर पति को तरसाते हुए एक गीत प्रस्तुत है-

"जुबना एँ छुअन नाएं दऊँगी

बलमा तोय मारूँगी तरसाय कैं।

लहँगा पहरि ओढ़नी ओढ़

सलूजा पहिरौ बनाय कैं।

सलूजा भीतर चोली पहिरी

ढोला ते छिपाय कैं॥ बलमा.....”[21]

जीवन में उतार-चढ़ाव हर संबंध में आते हैं। पति-पत्नी के संबंध में अक्सर कोमल, मधुर समय के साथ अनचाहा कठिन समय भी आता है। कुछ संबंध विपरीत परिस्थितियों के कारण टूट भी जाते हैं। लेकिन कुछ पुरुष महिलाओं को दुसरा विवाह या तलाक की धमकी देकर आजीवन डरा के रखते हैं। ऐसे ही कुछ प्रसंगों का उल्लेख निन्मांकित गीतों में किया गया है।

पति की अस्मिता को खंडित करती नारी कहती है -

“करि लीजो दूसरौ ब्याह लांगुरिया,

मेरे भरोसे इकलौ मत रहियो।

पीस न आवै मोपै पीसनो अरु डार न आवै मोपै कौर।

राँध न आवै मोपै राँधनौ अरु परस न आवै मोपै थार।”[22]

पति का अन्य नारी से नाजायज रिश्ते पर नारी का आक्रोश व्यक्त करता गीत निम्नांकित है –

“ऊपर है खस-खस का बंग्ला

तलै लगा बाजार जी

पाँचों खाने गिन गिन रखै

भूल गई आचार जी।

न जानूं किसनै ने खाया न जानूं बजार जी

ऊपर है खसखस क बंग्ला...

पाँचों लोटे गिन गिन रखै

भूल गई गिलास जी

ऊपर है खसखस क बंग्ला...

खोलौ-खोलौ विजन किवारिया हम बड़ै बिमार जी

बालि बच्चै बाहर डारौ

भीतर डारौ खाट जी...।

झुपर मढ़ैया में डारौ तेरी टुटी खाट जी

चना-मटरा की रोटी बनावौ

रांदौ मटर की दाल जी

खानै को जो मिले खाय लै

नाय तो जा बाके पास बजार जी"

(फिरदौस साबिर खान)

आभुषण प्रियता को दर्शाता लोकगीत प्रस्तुत है-

"भूसा बिकाय मोकूँ लाय देउ लटकन।

गैया बिकाऔ चाहै, भैंसन बिकाऔ।

बैलन बिकाय मोकूँ लाय देउ लटकन।"[23]

पति-पत्नी के बीच शाश्वत संबंध होता है जो एक उम्र के तीन चरण में समाया है। नवविवाहित से माता-पिता बनने तक के जीवन के अध्याय में अनेकों कठिन परिस्थितियों से जुझकर जब ये रिश्ता बुढ़ापे की दहलीज तक पहुँचता है तब सोने की तरह पवित्र और अचल व समृद्ध बन जाता है। एक दूजे के बिना रह नहीं सकते है ऐसी परिस्थिति बन जाती है। उमर के इस पड़ाव पर पति-पत्नी विविध अनुभूतियों को संझोये आगे बढ़ते हैं। ब्रज में ऐसे गीत प्राप्त होते हैं के जिनमें पति बुढ़ापे में अपनी पत्नी की कदर करता है और पत्नी की मृत्यु के बाद अफसोस करता है। जिस पर महिलाएं व्यंग्य करते हुए पति पर ताने कसते हुए गाती है-

“रंडूआ तौ रोबै आधी रात , चूल्है में जाके राख परी।

फुटी री रे तकदीर रँडुआ तोकूं नांय लुगाई रे।

पुरुषप्रधान समाज ने नारी अस्तित्त्व और उसके सम्मान की सदियों से अवहेलना करता आ रहा है डॉ. सत्येंद्र ने ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन पुस्तक में पति-पत्नी के संबंधों का गीत प्रस्तुत किया है- “पुरुष और स्त्री में लड़ाई हो गई। स्त्री अपने पीहर चली गयी। वहाँ सास ने जामाता से कारण पूछा तो उसके फूहर आचरण का अतिशयोक्ति को उल्लंघन करनेवाले अद्भुत वृत्त के द्वारा वर्णन किया, और तब कहा अपनी बेटी को अपने घर ही रखिए, हमसे नहीं संभलती है - गीत इस प्रकार है-

“खसम जोड़ भई लड़ाई, पीहर कूँ उठि चाली री भैना

हात बोइया, बगल में चरखा, पीहर में जे पहुँची री भैना

अँगना बिठंती माइलि पाई, कैसे धीअरी आई?

तेरे जमैया ने मारे, माइके चले आई री भैना

सोमत ते लाला जागे, ससुरारि मे भाजे दौरे री भैना

सासुलि बोलै बोलने, धीअरी कैसे मारी रे लाला

आऔ री मेरी सारी सरहज, सुनियो कान लगाइ

चूल्हे बैठी बार खसौटे, नौ मन राख उड़ावै

कच्ची पक्की दार पकावै, नौ मन के फुलका डारै

नौ मन की तौ रोटी खाइ गई, बटुला भरि के दारि

तीन घड़ा पानी के पी गई, पोखरि है गई खाली

चड़ि कोठि पै मुनन बैठी, घरु बहिगौ पटवारी कौ

पुल टुटियौ रैवाड़ी कौ ॥"[24]

नारी के मान स्वाभिमान का संघर्ष अनंत है सदियों से अपने ही रिश्तों से अधिकारों और अस्तित्त्व के लिए जुझ रही है। पारिवारिक विघटन की समस्याएं आम हैं परिवार की महिलाएं ही घर में आपसी रिश्तों में कलेश कराती हैं। नारी की अस्मिता को खंडित करने में खुद औरत ने औरत की अवहेलना की है।

ब्रज में प्रसव पीड़ा के कुछ लोकगीतों का विवरण हम गत पृष्ठों पर कर चुके हैं। स्त्री जब बालक को जन्म देती है तब वह अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य से सेवा, सहानुभूति, स्नेह चाहती है। नौ मास गर्भ धारण करने के बाद जब वह शारीरिक और मानसिक रूप से दुर्बल हो जाती है उस समय वह अपने परिवार विशेष रूप से अपने पति का साथ चाहती है। किंतु इस समय में उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता जिसे वह आजीवन भूल नहीं पाती। ब्रज में सोबर, जच्चा गीत आदि का उल्लेख मिलता है इन गीतों को देहात में 'जचकीरी' भी कहा जाता है।

भारतीय परंपरा के अनुसार बालक को जन्म देने के बाद स्त्री को चालीस दिन तक एक कमरे में रहना होता है उसके बिस्तर, बर्तन सब अलग कर दिए जाते है ग्रामीण महिलाएं आज भी इस नियम का पालन करती हैं और परिवार से अलग-थलग पड़ी रहती है। इन महिलओं के अनुसार सोबर के

दिनों में महिला अपवित्र है क्योंकि प्रकृति के अनुसार स्त्री की शारीरिक संरचना ऐसी है के जब वह नौ मास गर्भधारण करती है तब मासिक धर्म रुक जाता है। बालक के जन्म होते ही मासिक धर्म लगभग बीस से पैंतीस दिन तक रहता है। इस समय में महिलाओं को सेवा और खान-पान के साथ सहायता सहयोग की आवश्यकता होती है। किंतु जो बहू सारे परिवार का सुर्योदय से लेकर सुर्यास्त तक हर परिस्थिति में सेवा करती है जब वह अन्योन्याश्रित है तब उसे कोई झूठा सहारा नहीं देता। निम्नांकित गीत कि पंक्तियों में नारी की अवहेलना का चित्रण है जिसमें सास-ननंद गाली देकर गीत गा रही हैं के लेटे सब खा जाती है न सास को पूंछे न ननंद को पूंछे पड़ी-पड़ी इतराए मुस्कुराए।

"सब लपु-लपु खाई, छिनारिया की।

सासु कूं न पूछै ननद कूं न पूछै।

परी-परी इतराइ, परी-परी मुसकाइ, छिनारिया की।"[25]

पुत्र जन्मावसर पर ननंद नेग माँगती है, बहू को पहले से पता होता है कि उसकी ननंद ने अपनी ननंद को नेग में क्या दिया है! इसलिए वह अपने पति को कहती है कि नेग के चक्कर में संपत्ति धन दौलत सब मत लुटा देना।

"घर में अकैली सैंया घरु न लुटाई दीजौ।

सासु जो आवै सैंया द्वारे ते लौटाइ दीजौ।

सासु कौ नेगु मेरी मैया पै कराइ लीजौ।

ननदी जो आवें सैंया उनहू कूं लौटाइ दीजौ।

ननदी कौ नेगु मेरी भैना पै कराइ लीजौ।"[26]

ब्रज लोकगीतों में विभिन्न विषय पर गीत प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत गीत पर्दा प्रथा से संबंधित है इस गीत में परिवर्तन और आधुनिक युग में सर पे पल्ला और नकाब पहने की बात कही गयी है। आज कल फैशन के दौर में महिलाएं प्राचीन पहरवेश को इतना सम्मान नहीं देती कालजयी प्रवृत्तियों का आंकलन करने पर ज्ञात होता है कि आज का समाज रूढ़िवादी संस्कृति को पीछे छोड़ आगे बढ़ रहा है। मुख्यत: महिलाएं अपने इच्छा अनुसार पर्दा प्रथा को अपनाती हैं। कहीं न कहीं कुछ समुदाय आज भी पर्दा प्रथा को सक्रिय रूप से अपनाये हुए हैं।

"बहू तोहि लग्यौ है जमाने कौ रंग

देखिं तोहि जियरा जरि-जरि जाय।

उल्टौ पल्लौ तैंनैं लै लीयौ

औरु घूंघट दियौ छिटकाइ।

नैकहु ना सकुचावै सबसौं

हंसि-हंसि कें बतराय

बिजली घर में तैंनैं लै लई

नलहू लियौ लगवाई॥ बहू.....॥"[27]

उपर्युक्त गीत नारी अस्मिता का बोध काराता है। कहावत है कि हाथ की पाँच ऊंगली बराबर नहीं होती ठीक उसी प्रकार समाज में हर घर-परिवार में एक सा वातावरण नहीं होता। जहाँ हम अबतक पति द्वारा पत्नी का शोषण, सास-ननंद द्वारा बहू का शोषण आदि का वर्णन कर आएं हैं। वहीं कुछ घरों में आनेवाली बहू घरवालों की त्रासदी बनकर आती है। दिनरात उनको थाने, कोर्ट-कचहरी ले जाने की धमकी देती है। प्रस्तुत गीत ऐसी ही परिस्थितियों का विवरण है-

"अट्टै पै से कूद परी रे तुम दैखो जाका दीदा।

मैं तौ ऐसी खलकख्वार मोकूँ कर देयौ गधै पै सवार।

तुम देखौ मेरा दीदा।

अट्टै पै से कूद परी रे तुम दैखो जाका दीदा

मैं चार-छै सै लड़ि आयी मैं तौ घर कौ भजि आय री

अट्टै पै से कूद परी रे तुम दैखो जाका दीदा

मैंने सासऊ खूब धकियाई रे

तुम दैखो जाका दीदा

अट्टै पै से कूद परी रे तुम दैखो जाका दीदा

जब लिया हाथ मै डंडा फिर करा मरद को वंडा।

जा घर-घर मांगै कंडा रे

तुम दैखो जाका दीदा

अट्टै पै से कूद परी रे तुम दैखो जाका दीदा

जा मरद कौ आया गुस्सा आया वो अपना जाल बिछाबै....॥

फिर दैख कै सुरत मरद बहौत घबराए

जा करती है मनमानी रे

तुम दैखो जाका दीदा

अट्टै पै से कूद परी रे तुम दैखो जाका दीदा.....॥"

लोकगायक (मैसर खान)

अक्सर समाज में महिलाओं को उनकी काबिलियत के आधार पर कम ही आंका जाता है। लोकगीत में नारी-विर्मश कण-कण में व्याप्त है। किंतु शिष्ट साहित्य की भांति लोकगीतों में प्राप्त नारी-विमर्श इतना परिनिष्ठित नहीं हो सका जिसमें विद्वानों की असफलता रही है। लोकगीतों में नारी के योगदान और नारी की अस्मिता को महत्त्व देते हुए रामनरेश त्रिपाठी का कथन है कि- "जब गृहदेवियाँ एकत्र होकर पूरे उन्माद के साथ गीत गाती हैं, तब उन्हें सुनकर चराचर के प्राण तरंगित हो उठते हैं। आकाश चकित सा जान पड़ता है, प्रकृति कान लगाकर सुनती हुई सी दिखाई पड़ती है।"[28]

ब्रज लोकगीतों में सिल्ला बीनने, रोपनी, कटाई आदि गीत श्रम का भार कम और आनंद करने के लिए गीत गाये जाते हैं इन श्रमगीतों में महिलाएं पुरुषों के बराबर श्रम दान करती हैं। इस समय महिलाएं मौज मस्ती में गीत गाते-गाते अपनी अस्मिता को खंडित करने वाले पुरुषों पर व्यंग्य करती हैं।

"कोरी कलसिया शीतल पानी

रोटी देवे चाली रे

रोटी उतार मेड़ पर रख लई

गाजर खोदन लागी रे

खोदखाद सिर पर रख लई

पीछै पड़ौ भिखारी रे।

एक टूक मैंने वाको फैंको।

आय गय बलम हजारी रे

एक धाप मेरे मुख पै मारी

टूटि परी नथ वारी रे।

आठ दिनो मैंने अन्न न खायौ

दस दिन सोय गई न्यारी रे

कौठे ढूंढ कुठरिया ढूंढी जा पकड़ौ महतारी रे।

ऊँची अटारी झझन किवारी

जामेन सोय तेरी घरवारी रे।"[29]

ऋतुपरक गीतों में वर्षा ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, शीतऋतु में ग्रामीण मानव अनेकों कठिनाइयों से जुझता है। महिलाएं अभिव्यक्ति के कोई अवसर रिक्त नहीं जाने देती हैं। किसी न किसी बहाने से वे अपनी आपबीति को गीतों के द्वारा जोश में गाती हैं साथ ही अन्य महिलाएं आरोह -अवरोह में मलंग होकर गाती हैं।

"भरौ कटोरा दुध्ह कौ,

पिया बिना पियौ न जाय।

मैया बाप की लड़ैतिन जी,

कोई पिया बिन रहयौ न जाय।

ओटा पै जी कोई ओटारी जी

कोई सोना घड़ै सुनार

ऐसौ बिछछौआ गाढ़ दे

जाकि धमक सुनै कोई यार.....॥"

लोकगायक (जफर)

सावन की बेला में ग्रामीण महिलाएं झुलों पर गीत गाती थी इन गीतों सुख-दु:ख, हास्य-व्यंग्य, हास परिहास आदि भावनाओं का सम्मेलन होता था। प्रस्तुत गीत में पत्नी पीहर में है और अपने पिता से

कहती है के पति के बिना उसका मन विचलित है कोई ऐसी ध्वनी उत्पन्न करो कि उसके पति तक उसका ये विलाप पहूँच सके। निम्नलिखित गीत में नारी अपने मायके के रिश्ते-नाते याद कर रुदन करती है और ससुराल पक्ष ने उसे किसी से मिलने की अनुमति नहीं दी है। यहाँ झुला-झुलते समय नारी गीत के सहारे ससुराल की महिलाओं को ताना देते हुए ललकारती है और आनंद मय होकर गीत गाती है।

“मेरी भरी पिटारी फुलौं की

मैं मालिन बन बन आइ री...

मेरे बाबा बैठे बाग मै

मै उन सै मिल मिल आई री....

मेरी भरी पिटारी...

मेरे चाचा बैठे बाग मै

मै उन सै मिल मिल आई री....

मेरी भरी पिटारी...

मेरे भैया बैठे बाग मै

मै उन सै मिल मिल आई री....

मेरी भरी पिटारी...”

(फिरदौस साबिर खान)

शीत ऋतु में ब्रज में ठंड का प्रकोप असहाय होता है। ऐसे में देहात में कहते है के जब तुषार कटता है तब शारीरिक क्षमता ठंड झेलने कि हिम्मत तोड़ देती है फिर भी औरतें घर के खेत खलिहान के सभी आम करती हैं।

इस गीत में सास बहू ठंड में कामकाज को लेकर एक दूजे पर व्यंग्य करती है –

“अरि जा जाड़े को जौंहरते बहुअलि लैदीजो

खाट कुठरिया में

साल अब गई बीस की आय

जोरू जाड़े नें दियौ लगाय,

सौरि ढइया की लेउ भरवाय।

सो जाड़े में ठिठरंगे बालक तू दैलीजो खोर किवरिया में।

अरि जा जाड़े……..

कै जाड़ौ परि रहौ बेसुमार

चौ तरफ मचि गयौ हाहाकार

मारि दये लहाये औरु अरहार

सौ खेतन में ते झारि पताई लइयों बाँधि गठरिया में।

अरि जा जाड़े……..

भौत से खेत करे बिसमार

न बाकी छोड़ी एकऊ घार

परैगी कैसे जाने पार

सतौ जौर भेरावती मारौ है गयौ पार नगरिया में।

अरि जा जाड़े……..॥”[30]

किसान ऋतु की मार से बच नहीं सकता है ग्रामीण जीवनयापन विभिन्न कष्टों से भरा है। बे मौसम बरसात, सूखा, तुषार गिरने से किसानों की फसल बर्बाद हो जाती है जिससे वह जीवन जीने के लिए प्राथमिक वस्तुएं तक मुहैया कराने में असफल हो जाते हैं। पूस की रात में खेत खलिहानों में अलाव जला कर हाथ ताप कर जानवरों से फसल की रखवाली करते हैं। इस गीत में बहू अपनी सास से कहती है के अरहर की लकड़ी की गठरिया इस ठिठुरती हुई ठंड में वह खेत से काट कर लाई है। तुम्हें ठंड में ठिठुरने की कोई जरुरत नहीं है अपने बच्चों को लेकर दरवाजे बंद कर रखो।

नारी अस्मिता को सम्बोधित करते लोकगीत –

“हो हो हो हो शरण शहनाई की,

बिनु बालम नाँय कदर लुगाई की।

सिर के ऊपर सिरका अरु उसके उपर साई का,

दो मिनटों में चाल को बदलै क्या विश्वास लुगाई का॥

हो हो.....

छन कन-कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।

जो मोते सासुल लड़ै लड़ाई टूकन कूँ तरसाय दऊँगी॥

हो हो.....

छन कन-कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।

जो मोते ससुरा लड़ै लड़ाई आंचन कूँ तरसाय दऊँगी॥

हो हो.....

छन कन-कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।

जो मोते जेठजी रहै प्यार सौ भूरी भैंस बंधाय दऊँगी॥

हो हो.....

छन कन-कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।

जो मोते देवर रहै प्यार सौ छोटी भैन दिवाय दऊँगी ॥"[31]

इस गीत में नारी विद्रोही स्वर से सास और ससुर को धमकी देती है के अगर उसे सताया गया तो वह रोटी को तरसा देगी जो प्यार से रहोगे तो देवर के साथ अपनी छोटी बहन का विवाह भी करवा देगी। गीतों के मर्म को समझना और आज के युग में उनकी प्रासंगिकता को सार्थक होते देखना आश्चर्य की बात है। महिलाएं समाज में सम्मान से रहे यही उनकी अपेक्षा है।

"मैंने मना करी बालम ते सड़क पै मत खेलौ सट्टा।

सासऊ बेची सुसरऊ बैचौ बनवाय लियौ अट्टा।

चढ़ा अट्टा पै पितंग उड़ावै उल्लू कौ पट्ठा।

मैंने मना करी बालम ते.....

जेठऊ बैचौ जिठानिऊ बैची बनवाय लियौ अट्टा।

चढ़ा अट्टा पै पितंग उड़ावै उल्लू कौ पट्ठा।

मैंने मना करी बालम ते.....

देवरऊ बैचौ दौरानिऊ बैची बनवाय लियौ अट्टा।

चढ़ा अट्टा पै भाभीयै छेड़ि फोरि रह्यौ ठट्ठा ॥"[32]

नारी अपने पति को जुआ और सट्टे बाजी के लिए चेतावनी देती है किंतु वह उसकी एक नहीं ससुराल के सभी सदस्यों को सट्टे में हार के अट्टा यानी उंची इमारत बनाकार हँसता है।

लोकगीतों में नारी की वेदना, पीड़ा, दुख-दर्द, यातनाएं, शोषण सभी का उल्लेख मिलता है। श्याम परमार ने लोकगीतों में भाव एवं लोकमानव की नैसर्गिकता का चित्रण करते हुए कहा है कि- "गीतों के प्रारम्भ के प्रति सम्भावना हमारे पास है, पर उसके अंत की कोई कल्पना नहीं। यह वह बड़ी धारा है, जिसमें अनेक छोटी-मोटी धाराओं ने मिलकर उसे सागर की तरह गम्भीर बना दिया है। सदियों के घात-प्रतिघातों ने उसमें आश्रय पाया है। मन की विभिन्न स्थितियों ने उसमें अपने मन के ताने-बाने बुने हैं। स्त्री-पुरुष ने थककर इसके माधुर्य में अपनी थकान मिटाई है। इसकी ध्वनि में बालक सोये हैं जवानों में प्रेम की मस्ती आई है, बुढ़ों ने मन बहलाए हैं, वैरागियों ने उपदेशों का पान कराया है। विरही युवकों ने मन की कसक मिटाई है, विधवाओं ने अपने एकांगी जीवन में रस पाया है, पथिकों ने थकावटें दूर की हैं, किसानों ने अपने बड़े-बड़े खेत जोते हैं। मजदूरों ने विशाल भवनों पर पत्थर चढ़ाए हैं और मौजियों ने चुटकुले छोड़े हैं।"[33] विद्वानों ने लोकसाहित्य को स्त्री की देन माना है। ब्रज लोकगीतों में विषय बहुलता के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के गीत प्राप्त हुए हैं। डॉ. सत्येंद्र ने विषय बहुलता का प्रमाण देते हुए लिखा है कि- "स्त्रियों के गीत में उनके लोक की ही सामग्री रहती है, अधिकांशत: इन गीतों में नाते-रिश्तों का उल्लेख, नेगाचर, आभूषणों तथा भोजनों का वर्णन, टोटकों का अनुष्ठान, छोटी- छोटी प्रेमकथायें, परिपाटी से प्राप्त स्मृति का समावेश रहता है। इनमें कम से कम परिवर्तन होता है, पुनरावृत्तियाँ भी रहती हैं। जो नये गीत स्त्रियों में गाये जाते हैं वे या तो भक्ति-प्रधान होते हैं या किसी भी सामयिक विषय पर हो सकते हैं।"[34] ब्रज संस्कृति एवं परिवेश को देखते हुए ब्रज लोकगीतों में नारी की प्रत्येक समस्या का चित्रण प्राप्त होता है।

➢ निष्कर्ष

नारी जीवन का संघर्ष भारतीय समाज में कई सदियों से चला आ रहा है। समाज में नारी के अधिकारों की लड़ाई चुनौतीपूर्ण रही है लेकिन समय के साथ सामाजिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप कई भी सुधार हुए हैं। जिससे महिलाएं अपने आत्मसम्मान और जीवनयापान को सरल बनाने के प्रयास में सफल हुई हैं। शिक्षण, सामाजिक रुढ़िवाद, जातिवाद, लिंगवाद, रोजगार और दहेजप्रथा, बाल विवाह, प्रेम विवाह आदि सामाजिक अभिविन्यासों के खिलाफ महिलाएं आवाज उठा रही हैं। समाज में महिलाओं के हक के लिए और भी अधिक जागरूकता लाने का प्रयास जारी है।

लोकसाहित्य का अस्तित्व मानव सभ्यता के इतिहास में अहम भूमिका निभाता है। लोकसाहित्य यह विभिन्न भाषाओं, बोलियों और क्षेत्रों में प्राप्त होता है। लोकसाहित्य की समूचा अस्तित्व लोकमानव की भावनाओं, जीवनशैली, और सांस्कृतिक धाराओं का प्रतिनिधित्व करता है।

ब्रज लोकगीतों में भी नारी के जीवन की विविध समस्याओं का वर्णन मिलता है। जिसके अंतर्गत समाजिक समस्याएं, पारिवारिक समस्याएं, व्यक्तिगत समस्याएं, आर्थिक समस्याएं, आदि समस्याओं का निरुपण लोकगीतों में मिलता है। पौराणिक काल से ही नारी की स्थिति अति दयनीय रही है। भारतीय समाज में सदियों से अस्पृश्यता, भेदभाव, कुरीतियाँ, हैं जो समाज को दीमक की भांति खोखला करती आ रही हैं। कलुषित पितृसत्तात्मक विचार धारा के कारण नारी का जीवन समस्याओं से घिरा रहा है। बाल्यावस्था से वृद्धावस्था से लेकर महिलाएं विषम परिस्थितियों से लड़ती रहती है। नारी के संघर्ष की यात्रा आजीवन चलती रहती है। उसकी पीड़ा आकाश की भांति है जिसका कोई अंत नहीं जो असीम है। श्याम रंग होना, विवाह न होना, दिव्यांग होना आदि समस्याओं से नारी का

अस्तित्व जूझता है। लोकसाहित्य के अंतर्गत लोकगीत के माध्यम से नारी ने अत्याचारों, शोषण, अन्याय की गाथा स्वानुभूति के स्वर में गूंथ कर अपने कष्ट को व्यक्त किया है। सास-ससुर, ननंद, जेठ, आदि द्वारा नारी का शोषण किया जाता है नारी हर परिस्थिति में संघर्षशील बनकर परिवार की जिम्मेदारी निभाती है। लोकगीतों में प्रयुक्त भावनाए प्रेम-त्याग, वात्सल्य के रूप, सतीत्व, बलिदान, कुण्ठा, तनाव-भटकाव आदि को गा कर नारी मन कुछ पल के लिए यातना मुक्त हो जाता है। लोकगीत यह नारी के ह्रदय की व्यथा का महाकाव्य है।

बचपन से नारी को त्याग, बलिदान, संघर्ष के पाठ पढ़ाये जाते हैं। वह चाह कर भी खुलकर इस अन्याय के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकती है। अतएव कहीं न कहीं उस चेतना को परिणाम नहीं मिल पाया था लेकिन आज भी कई महिलाएं नारी विमर्श पर कार्य कर रहीं है। यहाँ हम देख सकते है कि नारी चेतना है लेकिन शिष्ट साहित्य की तरह नारी विर्मश की भांति चर्चित नहीं हो सका। हम अपनी सोच को बदलने का एक प्रयास करें तो यकीनन बदलाव हो सकता है। जिस दिन नारी और पुरुष के बीच की आधिकारिक भिन्नता मिटेगी। नारी को भी पुरूष के समान अधिकार और आदर मिलेगा, उस दिन समाज वास्तव में बदलेगा और महिलाएं सम्मान से अपना जीवन व्यतीत कर सकेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रमिला के.पी.; स्त्री-अध्ययन की बुनियाद; पृ.15
2. वही; पृ.25
3. वही; पृ.25
4. डॉ. शेफाली चतुर्वेदी; ब्रज लोकसाहिय नव चिंतन; (मैनेजर पाण्डेय से हुई मुलाकात के आधार पर); पृ.180
5. डॉ. त्रिलोकीनाथ 'प्रेमी'; ब्रज लोकगीतन में पारिवारिक संदर्भ; ब्रज लोक वैभव; सं. मोहनलाल मधुकर; पृ. 85-86
6. उद्धृत- सं. मोहनलाल मधुकर; ब्रज लोक वैभव; डॉ. आशा कुलश्रेष्ठ; ब्रजनारी लोकगीतन कौ सांस्कृतिक अरु साहित्यिक महत्व; पृ.16
7. उद्धृत- सं. मोहनलाल मधुकर; ब्रज लोक वैभव; श्री मेवाराम कटारा; सामन के लोकगीतन में नारी की विरह-वेदना; पृ.99
8. उद्धृत- सं. मोहनलाल मधुकर; ब्रज लोक वैभव; डॉ. नज़ीर मोहम्मद; ब्रज के लोकगीतन में सास-ननद; पृ.103
9. उद्धृत- सं. मोहनलाल मधुकर; ब्रज लोक वैभव; श्री भगवानदास मकरंद; लोकजीवन में संस्कार गीतन कौ महत्व; पृ.39
10. उद्धृत- माता प्रसाद; लोकगीतों में वेदना और विद्रोह के स्वर; पृ. 30
11. उद्धृत- सं. मोहनलाल मधुकर; ब्रज लोक वैभव; श्री हरीशचंद्र शर्मा; विविध लोकगीत; पृ.198
12. वही; पृ. 197

13. वही; पृ. 210

14. वही; पृ. 215-216

15. वही; पृ. 227

16. वही; पृ. 204

17. प्रमिला के.पी.; स्त्री-अध्ययन की बुनियाद; पृ. 17-18

18. वही; पृ. 46

19. वही; पृ. 93

20. उद्धृत- सं. मोहनलाल मधुकर; ब्रज लोक वैभव; डॉ. त्रिलोकीनाथ 'प्रेमी'; ब्रज के लोकगीतन में पारिवारिक संदर्भ; पृ.79

21. वही; पृ. 85

22. वही; पृ. 86

23. वही; पृ. 86

24. डॉ. सत्येंद्र ; ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन; पृ. 181

25. उद्धृत- सं. मोहनलाल मधुकर; ब्रज लोक वैभव; डॉ. नज़ीर मोहम्मद; ब्रज के लोकगीतन में सास-ननद; पृ.107

26. वही; पृ.107

27. वही; पृ.108

28. रामनरेश त्रिपाठी; कविता कौमुदी (भाग 5वाँ); पृ. 63-64

29. डॉ. कुलदीप; लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन; पृ 128-129

30. वही; पृ. 129-130

31. उद्धृत- सं. मोहनलाल मधुकर; ब्रज लोक वैभव; पृ. 236

32. वही; पृ. 237

33. डॉ. सत्येंद्र ; ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन; पृ. 536